पोवारी संस्कृति

(पोवारी कविता संग्रह)

✍ऋषि बिसेन (IRS)

पोवारी संस्कृति

(पोवारी कविता संग्रह)

ऋषि बिसेन

मनोगत

पोवारी, ३६ कुर को पोवार पंवार समाज की बोली आय। वैनगंगा क्षेत्र मा पंवार समाज की स्थायी बसाहट अठारवी सदी मा भयी होती। मालवा राजपुताना लक् आवन वाला क्षत्रिय संघ आपरी बोली अन् संस्कृति ला धरकन नगरधन वैनगंगा को क्षेत्र मा आयीन। मालवा मा महान परमार पंवार राजवंश को शासन होतो पर् चौदहवी शदी को शुरू मा मुस्लिम आक्रांता को कब्जा होवन को बाद भी आमरा पुरखा गिनना आपरी पहचान, धरम, संस्कृति अना बोली ला बचायकन राखिन। यव ३६ कुर को क्षत्रिय समूह योद्धा होता अन् आपरो पुरखागिन को मान सम्मान को बदला लेन लाइ अनेक राजा महाराजा गिन की मदद करीन।

अठारवी शदी मा शाह बुलंद बखत अन् मराठा शासन को राजकरण अन् सैन्य सहयोग लाइ योव समूह नगरधन वैनगंगा क्षेत्र मा आयो होतो। इनको शौर्य अन् वीरता को कारन ही येनो क्षत्रिय समूह ला वैनगंगा को क्षेत्र मा जाघा, मोठा मोठा किला, कई जागीरदारी पुरस्कार मा भेटी होती। वैनगंगा को पावन क्षेत्र मा यव् ३६ क्षत्रिय कुल को संघ, पोवार पंवार स्थाई रूप लक् एन् क्षेत्र का स्थायी निवासी भय गया। समय को साथ येन् समाज की बोली अन् संस्कृति मा दुही महान, राजपुताना संस्कृति अन् मराठा संस्कृति को समन्वय भयी से जो अज् वरी चोवसे । भंडारा, सिवनी, गोंदिया अन् बालाघाट जिल्हा मा पोवार समाज की मुख्य बसाहट से अन् यौ पुरो वैनगंगा क्षेत्र मा पंवार पोवार समाज मा समान बोली अन् संस्कृति को दर्शन होसे।

भाषा वैज्ञानिक डॉ. सु. बा. कुलकर्णी न् १९७२ में पोवारी बोली पर् एक शोध प्रकाशित करी होतीन। येन् शोध मा उनना लीखिन की पोवारी बोली बालाघाट, भंडारा और सिवनी जिल्हा मा निवासरत पोवार लोख् गिन द्वारा पोवारी बोली जासे। उनको अनुसार अज् की पोवारी बोली मा राजस्थानी, बघेली, मालवी और मराठी को समिश्रण दिससे। अज् लक् तीस बरस पहिले तक पुरो समाज पोवारी मा च बोलत होतीन। आधुनिकीकरण को दौर मा समाज मा पोवारी बोली ला सोडकन मध्यप्रदेश मा हिंदी अन् महाराष्ट्र मा मराठी को प्रयोग अधिक करन लगिन येको प्रभाव लक् समाज की जनसंख्या को अनुपात मा पोवारी बोलन वाला कम भय गयीन । गाव मा अज् भी पोवारी समाज मा बोली जासे पर शहर मा बहुत कम भय गयी से। पोवारी बोली आपरो पुरखागिन की पहिचान से अन् या बोली पोवारी संस्कृति को अटूट अंग से येको लाई पोवारी बोली को जतन अन् अधिकाधिक प्रचार प्रसार बहुतच जरुरी से।

मोरो जनम ग्राम खोलवा मा भयो होतो । खोलवा, बैहर तहसील को एक पोवारी बस्ती से। मोरो पालन पोषण पोवार समाज को बीच पोवारी संस्कृति अन् पोवारी बोली को बीच भयो। वोन् समय मा पुरो गाव मा सबझन पोवारीमाच बोलत होतीन पर धीरू धीरू पोवारी बोलन वाला कम होता गया अन् आता या स्थिति से की हिंदी को प्रयोग बहुतायत मा होसे। बैहर नगर मा सिहारपाठ पहाड़ी पर् स्थित पंवार समाज को तीरथ को मोरो जीवन परा बहुत प्रभाव से। बालपन मा एन् तीरथ मा खेलता कुदता मी मोठो भयी सेंव। समाज को प्रति पिरम अन् समाज को उत्कर्ष,

ऋषि बिसेन

पोवारी संस्कृति

समाज की पोवारी संस्कृति को जतन अन् पोवारी बोली को संरक्षण अन् संवर्धन को विचार को बीज मोरो मन मा पंवार समाज को सिहारपाठ बैहर मा होन वालो कार्यक्रम देखता देखता बोवाय गयो होतो।

नागपुर मा आवन को बाद मोरो संपर्क पोवारी साहित्यकार लक भयो अन् कोरोना काल मा बंदी को समय पोवारी मा लिखन को पिरम जाग्यो। पोवारी उत्कर्ष परिवार मा पोवारी बोली का कई कार्यक्रम लक् भूली बिसरि पोवारी ला सिखन को मौका मिल्यो अन् असो लग्यो की मोरो जिला बालाघाट मा पोवारी खतम होवन की कगार पर से, अन् आपरी पोवारी बोली संस्कृति ला बचावन लाइ पोवारी उत्कर्ष परिवार को साहित्यकार भाई बहिन को संग मी भी पोवारी बचावन को आंदोलन "पोवारी सत्याग्रह" को हिस्सा बन गयो। पोवारी बोली अन् पोवारी संस्कृति पर कई कार्यक्रम मा हिस्सा लेन को संग पोवारी सिखन अन् लिखन को उत्साह बढ़तो गयो अन् पोवारी मा किताब लिखन की प्रेरणा भेटी। येनो महान कार्य मा मोरी माय श्रीमती कृष्णा बिसेन अन् पत्नी सौ. बिंदु बिसेन को सहयोग लक् आपरी पोवारी संस्कृति अन् पोवारी बोली शिखन अन् लिखन मा सहयोग मिल्यो, इनको अना मोरो पोवारी उत्कर्ष परिवार को सप्पाई भाई बहिन को सहयोग लक् पोवारी संस्कृति का १०८ मोती, मोरी येन् कविता संग्रह "पोवारी संस्कृति" रूपी माला मा आय गयी से। शिवपुराण मा योव कही गयी से की, "अष्टोत्तरशतं माला तत्र स्यावृत्तमोत्तमम्", येको अर्थ से की मोती की माला मा १०८ मोती की माला श्रेश्ठतम रहसे। मोरो काव्य संग्रह मा १०८ की संख्या को यव् आदर्श, आधार से।

मोरी येन् कविता संग्रह मा पंवार वंश को इतिहास, संस्कृति, कला, सन् तिवहार, नेंग दस्तूर को संग मा समाज को सम्पूर्ण जीवन दर्शन विषय पर कविता लिखी सेव।

कविता मा या कोशिश रही से कि पोवारी का अधिकाधिक प्रयोग रहे पर पोवारी ज्ञान मा अल्पज्ञानी होवन को कारन हिंदी का भी शब्द् लेन मा आयी से। येन् महान काम मा पोवारी उत्कर्ष परिवार अन् अखिल भारतीय पोवार पंवार महासंघ को सप्पाई सदस्य गिनको आभारी सेंव जिनको प्रत्यक्ष अन् अप्रत्यक्ष रूप लक् सहयोग प्राप्त भयो। इंजीनियर नरेश जी गौतम न पुरो समय मोला प्रोत्साहित करीन, विशेषकर जब मोला कोरोना भयो अन् परिवार लक् दूर मोला कोरंटीन होवनो पड्यो तब् उनको योव कथन की यव एख्लो रह्वन को समय माय गढ़कालिका लक भेटी से अन् यव मुश्किल समय मा पोवारी कविता लिखान येला आसान बनाय देहे, मोला खूबच प्रेरित करिस की आता मोरो पोवारी काव्य संग्रह पुरो होय जाहे । माय गढ़कालिका अना अन् वाग्देवी की कृपा लक १२ दिवस को एक कमरा मा बंद रह्कन ये १०८ कविता लिखन को विशेष काम पुरो भयो। मि सहयोग अन् आशीर्वाद लाई ईश्वर, परिवार जन् अन् समाज जन् को धन्यवाद करुसु अन् या किताब समाज ला समर्पित करुसु।

ऋषि बिसेन (IRS)

राष्ट्रीय प्रत्यक्ष कर अकादमी, नागपुर

जन्म स्थान: ग्राम-खोलवा (बैहर), जिला बालाघाट

मूल निवास : ग्राम- खामघाट (लालबर्रा), जिला बालाघाट

ऋषि बिसेन

प्रस्तावना

जहाँ धार तहाँ पंवार, जहाँ पंवार तहाँ धार।

(पृथ्वी तणा: पंवार)

पोवार/पंवार शब्द को उच्चारण मात्र लका पोवारी बोली अना पंवार समाज को गौरवशाली इतिहास को सहज भाव लक दर्शन होय जासेत। इतिहास असो की रोम-रोम पुलकित होय जासेत जेकी गाथा पूरो जगत मा अधिकारिक रूप लका दर्ज सेती। यको प्रचार प्रसार मा पोवारी सत्याग्रह का प्रहरी आपलो सौभाग्य अना सामाजिक कर्तव्य की जाणीव कर सेती । मायबोली पोवारी को संवर्धन साठी संकल्प बद्ध सेती।

जेको गौरव, वैभव , राज कीर्ति चिरकाल लक् शाश्वत से असो संस्कृति का संवाहक मुन स्यारी आमरा पूर्वज जो परमार वंश नाव लका जान्या जासेती। पोवार/पंवार 36 कूल की संस्कृति अर्थात पोवारी संस्कृति येन मायबोली मा अज भी समाहित से। पंवार वंश की महिमा पुराण को प्रमाण लक्खा येन वंश की उत्पत्ति गुरु वशिष्ठ नआबूगड़ पर्वत मा एक यज्ञ को आयोजन कर वीर पुरुष की उत्पत्ति करीन जेला नाव देईन परमार। राजा परमार न गुरु इच्छा अनुरूप अन्याय को खात्मा कर न्याय को सुशासन की स्थापना करिन।

साहित्य संगीत कला विहिनः साक्षात पशुहः पुच्छविषाणहिनः

अर्थात-जेव व्यक्ति साहित्य संगीत अना कला लक रहित से, उ पुसटी अना सिंग बिना साक्षात पशु बराबर से।

मुनस्यारी आमरा पूर्वज राजा, राजा भर्तहरि, सम्राट विक्रम विक्रमादित्य, राजा उपेंद्र परमार, राजा शीयक, राजा मुंजदेव, राजा भोजदेव, राजा उदियादित्य पंवार, राजा जगदेव पंवार, राजा लक्ष्मण देव पंवार, राजा नरवर्मन देव, राजा महलक देव जसा अनेक राजा येन वंश का भया जिनन क्षत्रियत्व को संग संग साहित्य संपदा को सृजन अना सवंर्धन करिन। मालवा राजपुताना मा अतीत काल मा कई क्षत्रियवंश भया अना येन क्षत्रिय वंश मा पंवार वंश को मोठो मान से।

समय बीतन को संग क्षत्रिय गिनको कई क्षेत्र इन मा विस्थापन भयो। मध्य भारत मा भी मालवा का क्षत्रिय राजवंश बेरा-बेरा परा आयकन राज करीन एको इतिहास मा उल्लेख भेटसे। भंडारा गज़ेटियर १९०८ को अनुसार देवगढ़ नागपुर को राजा बुलन्द बख्त न आपरी सैन्य ताकत ला बढ़ावन लाइ उत्तर पश्चिम भारत लक् क्षत्रियगिन को एकीकरण करीन अन् उनन् आपरो राज्य मा क्षत्रिय योद्धा गिनला सैन्यपद, जमीन,किल्लेदारी अना जागीरदारी देयकन येन क्षेत्र मा बसाहत मा प्रोत्साहित करीन। आमरा पुरखा गिण परिस्थितिवश आपरो राज्य खोवन को बाद भी सतत मुस्लिम आक्रांता/विध्वंसक नीति इनको विरोधी रह्या अना कोनतो भी जवाब देन को अवसर नहीं चुकत होता। राजा बुलंद बख्त को प्रस्ताव ला स्वीकार कर मध्यभारत मा आपरो परिवार, धन दौलत अना आपली अश्व सेना को संग आयकन नगरधन-वैनगंगा को क्षेत्र मा बस गया। मराठा काल मा भी पंवार समाज न उनको संग सैन्य भागीदारी

करी होतीन अन् उनला पुरस्कार स्वरुप वैनगंगा क्षेत्र मा जमीन अन् जागीरदारी विजय को प्रतीक मा देईन।

बुलंद बख्त अन् मराठा काल मा मालवा राजपुताना लक् आयकन ३६ क्षत्रिय कुर को पोवार/पंवार बनावन को उल्लेख इतिहास मा दर्ज से। येन् संघ मा शामिल कुल, राजपूत कुल होता अन् वय आपस को शाखा मा शादी-बिहाव करत होता। वैनगंगा क्षेत्र की उपजाऊ धरती मा पोवार समाज का योद्धा काश्तकार भय गया अन् आपरी राजपुताना पहचान ला भी बनाय के राखिन। मराठा राजवंश को संग इनको सैन्य अन् राजकरण मा भी सहयोग होतो, एको लाई ३६ कुर को पोवार पंवार मा राजपूत अना मराठा संस्कृति को समन्वय दिससे। असल मा ये दुही संस्कृति सनातनी हिन्दू धरम की संस्कृति आय एको लाई इनको समन्वय पोवारी संस्कृति मा स्पष्ट रूप लक् दिससे।

आमरो पुरखा गिनना आपरी सनातनी पोवारी क्षत्रिय संस्कृति ला संजो कर राखी सेत अन् अज भी ये आपरा मूल रूप मा दिससे। माय वैनगंगा को क्षेत्र बालाघाट, गोंदिया, भंडारा अना सिवनी मा पोवार पंवार मूल रुप लक् बस्या होता। अज भी ये येन जिल्हाहीन मा आमरो समाज बहुसंख्यक सेती। कृषि कार्य को अलावा पोवार पंवार समाज हर क्षेत्र मा तरक्की कर रह्या सेती अन् देश को विकास मा सब लक खांद लक खांद मिलायकन चल रह्या सेती।३६ कुर को पोवार पंवार समाज की आपरी विशिष्ट बोली अना संस्कृति से। पोवारी बोली अन् पोवारी संस्कृति को मूल रूप ला पंवार पोवार समाज न आपरो पुरखा गिन को मूल क्षेत्र मालवा राजपुताना लक धरकन आनी सेन। पोवार समाज को भाट गिनना आपलो पोथी मा ये तथ्य दर्ज करि सेन।

कई ३६ कुर का क्षत्रिय मालवा राजपुताना को अलग अलग क्षेत्र लक् आयकन नगरधन मा सबलक पहिले बस्या होता। ये तथ्य ब्रिटिश गैज़ेटिएर, जनगणना को दस्तावेज अन् इतिहास को कई किताब मा स्पष्ट रूप लक मिल जासेत। १७०० लक १७७५ वरी पोवारी बोलने वाला राजपूत समुह वैनगंगा को क्षेत्र मा स्थायी रूप लक बस गया होतो। १३१० मा मालवा को परमार वंश को राजवंश को समाप्ति को बाद वोन क्षेत्र मा मुस्लिम आक्रांता गिन को शासन स्थापित भय गयो होतो। आमरा पुरखा गिनना आपरी पहचान कभी नहीं खोयीन।

नगरधन आवन को पहिले भी आमरो पुरखा मालवा लक बुंदेलखंड वरी विस्थापित भया। भाषाविद कसेत कई पोवारी बोली मा राजस्थानी, मालवी अना बघेली को प्रभाव दिस से, येन तथ्य ला समर्थन देसे १३१० लक १७०० को बीच मा ३६ कुल का ये क्षत्रिय आपरो समूह मा उत्तर कन विस्थापित भया अना १७०० को आसपास बुलंदबख्त को आग्रह परा नगरधन नागपुर मा बस्या। रसेल की किताब अना ब्रिटिश गैज़ेट मा पोवार समाज को ३६ कुर को इतिहास मिल जासे की येव समूह आपस मा एकीकृत होतो अना आपरी संस्कृति अना पोवारी बोली ला सहेजकर ठेई सेन। भाषायी सर्वे मा पोवारी बोली, इतिहास अना स्वरुप को उल्लेख से।

सेंट्रल प्रोविसेंसेस सेन्सस १८७२ को अनुसार मालवा का प्रमार नगरधन (रामटेक) मा आयकन् बस्या होता। पोवार इन् न नगरधन मा एक किला बनावन को भी येन जनगणना दस्तावेज मा उल्लेख से। यन् जनगणना मा भंडारा जिला मा ४५,४०९, सिवनी जिला मा ३०,३०५ अना बालाघाट जिला मा १३,९०६ पोवार समाज की जनसँख्या होती। रिपोर्ट्स ऑफ़

एथनोलॉजिकल कमिटी, नागपुर, १८६८ मा भी औरंगजेब को समय मा मालवा को पंवार राजपूत गिनको नगरधन आयकन बसन को उल्लेख कर सेती।

आयरिश अधिकारी अना भाषाविद श्री जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन को नेतृत्व मा १९०४ मा देश व्यापी भाषायी सर्वेक्षण को काम भयो होतो। लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया, नाव की आपरी रिपोर्ट को पृष्ठ क्रमांक १७७-१७९ मा श्री ग्रियर्सन महोदय को द्वारा पोवारी बोली को विषय मा लिखी गयी से। उन न येन रिपोर्ट मा तथ्य का उल्लेख करि सेन की पोवार, मुलत: मालवा का राजपूत प्रमार आती जिनकि भाषा पोवारी से। १८९१ को जनगणना मा वैनगंगा क्षेत्र को बालाघाट, भंडारा (गोंदिया) अना सिवनी जिला मा पोवार (पंवार) समाज की जनसँख्या १,१३,६०४ होती अना वोय पोवारी बोलत होता। कैटेलॉग ऑफ़ लैंग्वेज एंड फैमिलीज़: ग्लूटोलॉग &जॉर्ज अ. ग्रियर्सन, १९०४ मा यव तथ्य उल्लेखित से की पोवारी, इंडो आर्यन सेंट्रल ज़ोन की उपभाषा, ईस्टर्न हिंदी की उपभाषा से। बोली भाषा को अध्ययन करन वाली संस्था मल्टी ट्री, मा पोवारी बोली को कोड pwr , कोड : ISO ६३९-३, इंडो-यूरोपियन फॅमिली देनो मा आयी से। Ethnologue : The language OF world मा पोवारी बोली ला वैनगंगा पोवारी [(Vyneganga Powari) (pwr - vyn) ला अभिलेखित करी गयी सेती। OLAC रिकॉर्ड मा पोवारी बोली ला pwr कोड लक् आपरो रिकॉर्ड मा शामिल करी सेन।

आजादी को बाद को प्रथम जनगणना दस्तावेज Language Handbook: Chhindwara, Betul, Hoshangabad, Nimar and Balaghat Districts, 1956 मा बालाघाट जिला मा पंवार (पोवार) समाज की बोली पोवारी को उल्लेख से। तसोच Language Handbook : Nagpur, Chanda, Bhandara and Amrawati Districts मा भंडारा जिला मा पोवारी नाव लक पोवार (पंवार) समाज की बोली को उल्लेख से।

सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट, गज़ेटियर्स, बालाघाट डिस्ट्रिक्ट(१८९१-१९०१) को पृष्ठ क्रमांक १३ मा पोवार की बोली पोवारी अन् पोवारी बोलन वाला की संख्या ४१,०४५ दर्शायी गयी से।

येन कड़ी ला आगे बढ़ावन साठी अना पोवारी को संवर्धन साठी समाज का बहुत सा वरिष्ठ साहित्यकार प्रयासरत सेती। पोवारी संस्कृति को माध्यम लका सन्माननीय कवि न आमरो पूर्वजो इन की धरोहर ला विराम न देता आवनेवाली नवीन पीढ़ी साठी पोवारी संस्कृति की रचना कर स्यारी समाज मा एक नव क्रांति/अलख जगावन को प्रयत्न करी सेन।

पोवारी संस्कृति को रचना संग्रह को माध्यम लका पोवारी को हर पहलू का मार्मिक, तार्किक, ऐतिहासिक महत्व, सँस्कार, रीति-रिवाज, वर्तमान व्यवसाय, त्योहार, वीरगाथा, राज वैभव, पोवारी का कुलदैवत, कुलमाता, पंवार तीर्थ सिहारपाठ बैहर की विस्तृत अना बोधपूर्ण जानकारी को खजाना पोवारी बोली मा सरल सहज रूप मा वर्णित करी सेन।

आमरो मायबोली को महत्व अना
पोवारी सँस्कार को एक अटूट बन्धन से।
मायबोली आमरो सँस्कार को आधार से,
आमरो विरासत की संवाहक सेत।
आमरो वजूद की दस्तक से

ऋषि बिसेन

पोवारी संस्कृति

आमरी मूल पहचान अना भविष्य को आधार से।
मायबोली आमरो समाज की तारणहार से।

कवि न समाज को प्रत्येक भाव ला जो पोवार समाज को अभिन्न अंग सेती या प्रतिनिधित्व कर सेती असो पूरा विषय येन पोवारी संस्कृति काव्य ग्रन्थ मा अनमोल मोतिस्वरूप माला रुप मा पेरण की पूरी कोशिश करी सेन।

येन पोवारी संस्कृति रुपी ग्रन्थ ला हर घर घर मा उचित स्थान मिल असि शुभकामना सेती। बोली को व्यवहार खुद लका बातचीत करन को नोहय बल्कि पुरो समाज को एकता अना विकास को सबंध स्थापित करन को माध्यम आय। समाज विभिन्न परिस्थिति मा आपलो बोली मा चाहे जेतरो बदल कर ले पर आम्ही जेन समाज ला प्रतिनिधित्व कर सेजन वोकी मायबोली को महत्व सदा सर्वश्रेष्ठ से।

एलन अना कार्डर भाषाविद को अनुसार बोलीभाषा सरंचित होसे अर्थात प्रत्येक बोली काही सामाजिक सिधांत पर संघटित होसे जो आमरो संस्कृति अना आचार-विचार को दर्पण रव्ह से। मुनस्यारी आमला आपलो मायबोली को जतन सवंर्धन अना उपयोग करनो बहुत जरूरी से ।

कवि न पोवारी सत्याग्रह को उद्‌देश्य ला सार्थक करी सेन असो मोरो मत से उनला येन महत्वपूर्ण रचना सग्रह की बहुत बहुत बधाई अना समाज मा नवक्रान्ति की आधारशिला साठी कोटि कोटि वंदन अभिवादन से।

लेखक-कवि परिचय का मोहताज नहाती पोवार समाज मा जन्मया अना गाँव मा पोवारी सँस्कार मा पल्या बड्‌या मृदुभाषी, कोमल हृदयी शालीन उच्चशिक्षा प्राप्त अना समाज को युवावर्ग साठी प्रेरणा स्त्रोत आदरणीय श्री ऋषि बिसेन जी वर्तमान सयुंक्त निदेशक को पद पर राष्ट्रीय प्रत्यक्ष कर अकादमी मा सेवारत रव्हन को बावजूद समाज साठी सदैव तत्पर अना आपलो कीमती समय समाज पर अर्पित करनेवाला व्यक्तिव सेत उनकी कार्यशैली का सब कायल सेती समाज को प्रति तुम्हारो योगदान अतुलनीय से।

तुमरो यश की रोशनी चहुँ दिशा मा फैलकर सबका प्रोत्साहित करत रव्ह या ईश्वर लक प्रार्थना से।

पोवारी संस्कृति साठी बहुत बहुत शुभकामना पोवारी मायबोली को प्रसार मा अना सामाजिक उत्थान मा असोच योगदान चिरकाल वरी बनेव रव्ह याच प्रार्थना। जय राजाभोज जय मायबोली पोवारी जय माय गढ़कालिका।

नरेशकुमार गौतम
उपविभागीय अभियंता, मुम्बई
उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार/पंवार महासंघ
२८/०३/२०२१

******

अनुक्रमणिका

पोवारी संस्कृति

ऋषि बिसेन

पोवारी संस्कृति

ऋषि बिसेन

१.जय श्री गणेश

करुसु बिनती मी तोरी, जय गनपति देवा ।
जय गणेश, जय गणेश, जय गनपति देवा ॥

माय पारबती तोरी, अजी शंकर महादेवा ।
प्रथमपूज्य सेव तुम्ही, अय गनपति देवा ॥

गनपति तुम्ही सेव, पारवती को राजदुलारा ।
प्रभु तुम्ही आव, शिवजी को डोरा को तारा ॥

एकदन्त सर्व शांति कारक सेव, प्रभु श्री गणेश ।
श्रष्टि को रचनाकार, आती पिता तुमरो उमेश ॥

लम्बोदर कर् सेव तुम्ही, मूषक डिंक की सवारी।
दया पायकन सब आती, देवा तुमरो आभारी ॥

सिद्ध विनायक तुम्ही सेव, सबको संकट हारी ।
विघ्नेश्वर आव तुम्ही सदा शुभ मंगलकारी ॥

विनायक तुमरो द्वार मा, जेन आव सेती ।
खाली हाथ कोनी भी, वापिस नहीं जावती ॥

बिनती से तुमला, देय समृद्धि सबला मोरो देवा ।
सबला देय हरियाली अना खुशहाली मोरो देवा ॥

****

ऋषि बिसेन

२. कुलदेवी महामाया गढ़कालिका

देवी का उपासक आती आमी क्षत्रिय पंवार,
माय गढ़कालिका से कुलदेवी, महामाया अवतार ।

नवरात्रि का नव् दिवस होसे माय की महापूजा,
पोवार समाज मा उपासी रहोसेत सब् ऊजा ।

सम्राट विक्रमादित्य की कुलदेवी होती माय हरसिद्धि,
महाराजा भोज न् माय गढ़कालिका लक् लेईन सिद्धि ।

राजा जगदेव पंवार की आरध्या, होती माय कंकाली,
माय को पायमा आठ गन शीशदान की कथा से निराली ।

मातृशक्ति की पूजा आय सनातनी पोवारी संस्कार,
सबला देय असो वरदान, की होय जाहे सपन् साकार ।

हर गाव की शान् होसे माय को घर मातामाय,
माय की भक्ति मा नृत्य करसेती, हाथमा खप्पर जमाय ।

अखाडी अन् बिहाव मा होसे, माय की पूजा,
माय मनोकामना पूरी कर सबकी, नहाय कोई दूजा ।
****

ऋषि बिसेन

३. हर हर महादेव जय महाकाल

महादेव तुमरोसेती जगमा विविध नाव् ।
देवों का देवता सेव तुम्ही देव् महादेव ।।
जग ला नवी दिशा देसे तुमरो नेत्रभाव ।
संहार को देवता नीलकण्ठ आदिदेव ॥१॥

सृष्टि को रचनाकार विश्वेश भोलेनाथ ।
तुम्ही सेव प्रलयकर्ता अना मंगलकर्ता ।।
शिव शक्ति प्रतिरूप तुम्ही चन्द्रशेखर ।
दुर्धर संताप हर्ता तुम्ही आव् संकटहर्ता ॥२॥

मृत्यु परा विजयी देव भूतनाथ मृत्युंजय ।
डोस्का मा विराज चन्दा घुमावसे काल ।।
जटाधारी महामृत्युंजयला करसे प्रसन्न ।
ज्योतिषशास्त्र को आधार से महाकाल ॥३॥

स्वरुप मा तुमरो से प्रकृति को श्रृंगार ।
मोठी जटा को संग तुम्ही सेव जटाधर ।।
देवा तोरी जटा लक् हिटी से माय गंगा ।
कृपानिधि उमापति तुम्ही आव गंगाधर ॥४॥

भगवान शिव को स्वरूप कल्याणकारी ।
ज्ञान अना मुक्ति की भेटसे अंत:शक्ति ।।
रुत दूर करन वाला सेव महादेव महारुद्र ।
मोक्ष पावसेत वोय करसेत तुमरी भक्ति ॥५॥

पंवार वंश का तुम्ही कुलदेव महाकाल ।
रह्वसे घर घर मा पूजाघर तोरो महादेव ।।
धरा लक् मिटाय देव दुख अना संताप ।
देय सुख समृद्धि सबला मोरो महादेव ॥६॥

****

ऋषि बिसेन

४. पंवार(पोवार) कुलदेव महादेव

पंवार वंश को कुलदेवता ।
उज्जैन को राजा महाकाल ॥
सम्राट विक्रमादित्य को आदर्श ।
शिव शंकर महाकाल ॥१॥

मालवा की माटी लक् ।
वैनगंगा क्षेत्र मा आयी सेत् पंवार ॥
महादेव ला सब लक् मोठोदेव ।
मानसेती क्षत्रिय पोवार ॥२॥

हर हर महादेव को जाप कर ।
सदा बिनती करुसु मि तुमरी ॥
सब दुःख ला हर लेव ।
साजरी राखो जिंदगानी हमरी ॥३॥

कई रूप मा तुमरो भक्ति करसेत ।
भक्तगण सब संसारी ॥
कण कण मा तुम्ही बसी सेव देवा ।
लीला से तुमरी न्यारी ॥४॥

टूरा गिनको भार संस्कार ।
राखसेजन आमी क्षत्रिय पंवार ॥
देय इनला आशीर्वाद महादेव ।
इनको जीवन ला कर् संवार ॥५॥

****

ऋषि बिसेन

५. माय वाग्देवी सरस्वती

विद्या अन् ज्ञान की देवी,
माय सरस्वती को से स्वरूप,
माय वाग्देवी !!!

सबकी परमपूज्य से देवी,
राजा भोज की होती आराध्य,
माय वाग्देवी !!!

संस्कृत अन् संस्कृति की देवी,
भोजशाला मा विद्या की देवी,
माय वाग्देवी !!!

संगीत अना गीत की देवी,
वेद अन् शास्त्र की माता,
माय माग्देवी !!!

सबला देसे वाणी या माता,
सोच अन् बुद्धि को दाता,
माय वाग्देवी !!!

सबला दे योव वरदान देवी,
देय ज्ञान अन् बुद्धि को दान,
माय वाग्देवी !!!

जय माय वाग्देवी सरस्वती
****

ऋषि बिसेन

६. माय प्रकृति को आंचल

प्रकृति को आंचलमा भेटि से ममता की छाव ।
केतरो खूबसूरत से यव् जीवन को पड़ाव ॥

जीवन को हर यक् पल बहुतच से खाश ।
दुःखों को सागर मा भी नोको होवो उदास ॥

समय के चक्का का बीतन को संग संग ।
मिल जासे कई दोस्त भाई गिन को संग ॥

हर हाथ ला बनावनो से सच्ची दोस्ती का साथ ।
हर भेट बन जाये दोस्त संग जीवन भर को साथ ॥

जीवन को आधार से माय प्रकृति को आशीर्वाद ।
आशीर्वाद मिलहे जब होये वोको लक् सुसंवाद ॥

प्रकृति ला संवारन हर हाथ ला आगे आवनो से ।
आओ सब मिलकन येला खुबशुरत बनावनो से ॥
****

ऋषि बिसेन

७. सीता राम

मर्यादा का सेती आमरो प्रभु श्रीराम मुरत !
त्याग अना ममता की से सीता माय सुरत !!

प्रभु श्रीराम को मिलसे आशीष हम सबला !
माय सीता को भी मिलसे पिरम सदा हमला !!

माता सुनयना की राजदुलारी से सीताजी !
मिथिलानरेश जनक सेती उनको पिताजी !!

माय कौशल्या को नंदन सेती प्रभु रघुपति !
अजी उनको से राजा दशरथ अयोध्यापति !!

वचन निभावन राम गयीन वन सीता को साथ !
भाई लक्ष्मण ना भी नहीं सोढ़िन उनको हाथ !!

पुरुषोत्तम श्रीराम न करीन धरम को उद्धार !
पापी गिनको वधकर् भेजीन धरती को बाहर !

आया अयोध्या अना मनाया दीवारी तिव्हार !
रामराज्य मा न्याय अना सत् को होतो सार !!

श्रीराम ला पुरखा मानत् होता विक्रमादित्य !
अयोध्यामा उनना पेटाया पंवार नवआदित्य !!

पोवार वंश को मन मा बस्या सेती श्रीराम !
बैहर मा बसाइन उनना आपरो पंवार धाम !!

जय सियाराम जय सियाराम जय सियाराम !
बोलबीन अना भजबीन सदा जय सियाराम !!

****

ऋषि बिसेन

८. अग्निवंशीय क्षत्रिय आमी पोवार

अग्निवंशीय क्षत्रिय आती आमी पोवार ।
आबूलक मालवा वरी राजा होता आमी ॥
मालवा लक् नगरधन वरी आया पोवार ।
राजकरण सैन्य को काज निभाया आमी ॥१॥

माय वैनगंगा की आंचल की छाँव मा ।
धरतीला खुशहाल बनाया सेजन आमी ॥
पढ़ाई लिखाई कर ज्ञानवान भया समाज ।
हर क्षेत्र मा विकास ध्वज लहराया आमी ॥२॥

३६ कुर का आती आमरो पोवार समाज ।
क्षत्रिय धर्म को मान ला बढ़ाया आमी ॥
पंवार पोवार की बोली से गोढ़ पोवारी ।
सनातनी धरमला निभाव सेजन आमी ॥३॥

****

ऋषि बिसेन

९. पंवार वंशीय योगी भृतहरि

उज्जैन मा पंवार वंश मा जन्म्यो,
राजा गंधर्वसेन को टुरा,
राजा भृतहरि.........

संस्कृत को कवी, नीतिकार,
योगी को रुपमा सबला स्वीकार्य,
योगी भृतहरि.........

सम्राट विक्रमादित्य को मोठो भाई,
राजपाठ ला त्यागिन सन्यास लाई,
बाबा भृतहरि.........

शतकत्रय की रचना करीन,
गुरु गोरखनाथ का चेला भयीन,
वैरागी भृतहरि.........

बारह बरस की करीन तपस्या,
मिल्यो ज्ञान साकार नमस्या,
सन्यासी भृतहरि.........

भृतहरि अना भाचा गोपीचंद की कथा,
नाथ सम्प्रदायी गावसेती गौरवगाथा,
महर्षि भृतहरि........

****

ऋषि बिसेन

१०. सम्राट विक्रमादित्य

चक्रवर्तीय सम्राट, उज्जैन को नरेश, शक् विनाशक ।
न्याय अना मानवता को रक्षक, सम्राट विक्रमादित्य ॥
महाकाल को परम भक्त, उपासक, उज्जैन को राजा ।
माय हरसिद्धि अना कालिका को भगत, विक्रमादित्य ॥

प्रमार अग्निवंशीय, पृथ्वी को सम्राट, वीर विक्रमादित्य ।
राज्य उनको धरा मा फैल्यो जसो आकाश मा आदित्य ॥
प्रजा होती बड़ी खुश जसो उनको राज्य होतो रामराज्य ।
शत्रु नाव सुन हार मानत होता वय होतीन विक्रमादित्य ॥

भाई विक्रमसेन ला राजपाठ सौप भया योगी राजा भृतहरि ।
संखनाद विकास को कर विक्रमादित्य ना देईन नवी दिशा ॥
सिहांसन बत्ताशीमा बसकन देईन धरामा न्याय को शासन ।
विद्धान नवरतन को संग, दूर करीन पाप की कालनिशा ॥

सनातनी धरम को रक्षक ज्ञान अना विज्ञान को अविष्कारक ।
विक्रम संवत् चलाय काल गणना करीन पृथ्वी को यव् सम्राट ॥
धरती को मोठो हिस्सामा राजा विक्रमादित्य का होतो शासन।
शौर्यवान चक्रवर्तीय सम्राट वीर विक्रमादित्य को रूप विराट ॥

****

ऋषि बिसेन

११. पंवार राजा वाक्पति मुंज

शीयक द्वितीय को, दत्तक पुत्र होतो मुंज ।
प्रमार वंशीय महाराज, वीर वाक्पति मुंज ।।

मुंज,राजा शीयाक ला भेट्यो होतो घास मा ।
वोको यव दत्तक पुत्र, बस्यो सिंहासनमा ।।

मुंज को नाव,अमोघवर्ष अना श्रीवल्लभ ।
अखिन नाव होतो, उनको पृथ्वी वल्लभ ।।

बायको कुसुमावती होती,मालवा की पटरानी ।
शस्त्र अना शास्त्र मा, निपुण होती महारानी ।।

होता भक्ति वीरता,अना शक्ति का पुंज ।
साहित्यकार विद्वान होता,वाक्पति मुंज ।।

मुंज को उज्जैन, विक्रमादित्य की धरोहर ।
मुंज न धार मा बांधिन, महल अन् सरोवर ।।

मोठो क्षेत्र मा फैलो, होतो मुंज को राज्य ।
भोजदेव ला उनना सौपीन आपरो राज्य ।।

****

ऋषि बिसेन

१२. पावन नगरी उज्जैन

महाकाल की नगरी से उज्जैन नगरी ।
कुम्भ जत्रा की नगरी से उज्जैन नगरी ॥

सम्राट विक्रमादित्य की नगरी से उज्जैन ।
माय क्षिप्रा को तट पर् नगरी से उज्जैन ॥

भगवान विश्वकर्मा की रचना से उज्जैन ।
परमार पंवार वंश की नगरी से उज्जैन ॥

पूर्व को अवन्ति से ऐतिहासिक उज्जैन ।
सांदीपनि आश्रम की नगरी से उज्जैन ॥

योगी भर्तहरी को योगभूमि से उज्जैन ।
कालभैरम को निवास स्थल से उज्जैन ॥

उज्जैन से कवि कालिदास की कर्मभूमि ।
उज्जैन से महाराजा भोज की जनमभूमि ॥

धरम अना वीरता को तीरथ से उज्जैन ।
पंवार वंश को ऐतिहासिक नगर उज्जैन ॥

देश मा पावन महाकाल की नगरी उज्जैन ।
सब लक् बिनती से येकान गन जाओ उज्जैन ॥

****

ऋषि बिसेन

१३. राजपुताना वैभव

वैनगंगा क्षेत्र को पंवार,
क्षत्रियता को वैभव,
राजपूत वंशीय !

खूबसूरत गोरो रंग,
ऊंचो डोस्का घारी डोरा,
राजपूत गुण !

मेहनती अना जीवट,
साहसी अना आक्रामक,
राजपूत शान !

छतीश क्षत्रियकुल को संघ,
नाव से पोवार पंवार,
राजपूत कुल !

पोवारी बोलन वाला,
राजपुताना की बोली,
राजपूत वंशीय !

हर क्षेत्र मा उत्कृष्ट,
तरक्की करन वारो,
राजपूत पंवार !
****

ऋषि बिसेन

१४. धारानगरी

मालवा की पावन धरती मा,
धारानगरी होती येक संस्कारधानी ।
महाराजा भोजदेव न् बनाइन,
यन् नगरी ला मालवा की राजधानी ॥

संस्कृत विश्वविद्यालय भोजशाला,
स्थापित भयो धारानगरी मा ।
वाग्देवी सरस्वती को मंदिर,
इत् स्थापित करीन राजा भोज ना ॥

परमार वंश ना स्थापित करीन,
धारानगरी येक सांस्कृतिक धरोहर ।
यन् नगरी मा राजा वाक्पति मुंज न्
निर्माण करवाइन मुंज सरोवर ॥

महाकाल की नगरी उज्जैन लक्,
राजा भोज आयिन धारानगरी ।
कुलदेवी माय गढ़कालिका भी आयी,
आपरो पुत्र संग धारानगरी ॥

परमार पंवार वंश को वैभव,
मान सम्मान की नगरी भयी धारानगरी ।
माय गढ़कालिका को आशीर्वाद लक्,
समृद्धशाली भयी धारानगरी ॥

उदियादित्य,नरवर्मन जसा कई भया,
धारनगरी को मोठा महाराजा ।
राज्यपाठ अना शीशदान कर,
जगदेव पंवार भयीन दानवीर महाराजा ॥

ऋषि बिसेन

समय बीतन को संग पंवार बसीन,
भारत देश को कोना कोना मा ।
अठारवी शदी मा मालवा का पंवार,
आयकन बस्या वैनगंगा क्षेत्र मा ॥
****

१५. मातृशक्ति

मातृशक्ति को पूजक से पंवार पोवार समाज,
बहु बेटी ला देसे पुरो मान सम्मान योव समाज ।

बिटिया को जनम मा कसेती आई घर लक्ष्मी,
बहु को आवन मा घर आवसे नवी माय लक्ष्मी ।

देवी को स्वरूप होसे घर की हामरी प्यारी बेटी,
वोकि पूजा संग कन्याभोजन को संस्कार होसेती ।

माय दुर्गा को अवतार वानी करसे घर की रक्षा,
देवी को कई रूप जसो काम करसे पोवार नारी ।

जाय कर दुसरो घर ला संवार देसे बिटिया हामरी,
सदा बिटिया को पाव लगसे योव से संस्कार पोवारी ।

बेटा बेटी मा काई भेद नहीं कर् हाम्रो समाज,
मातृशक्ति का पूजक से हाम्रो पंवार पोवार समाज ।

बहु बेटी बन पीढ़ी दर पीढ़ी लिजासे घर को संस्कार,
नारी तु सदा मातृशक्ति असा सेती पोवारी संस्कार ।

****

ऋषि बिसेन

१६. नवरात्री

सर्वशक्ति से माय तू,
करुशु भक्ति मी तोरी !
दे वर असो मोला,
लगायदे नईया पार मोरी !!

नवरूप को नवदिनमा,
होसे पूजा माय तोरी !
धरती ला बनायदे स्वर्ग,
सुन बिनती मोरी !!

हर युगमा हर कालमा,
महिमा से सबदुन तोरी !
हर बेटीला दे आपरी शक्ति,
या आश से मोरी !!

कलयुग मा कालिका शक्ति,
पुंज रूप से तोरी !
पुरो दुःख ला हर ले माय,
अभिलाषा से मोरी !!

नावलक संकट मिटजासे,
असी महिमा से तोरी !
दे शक्ति नवी पीढ़ी ला माय,
विनती से मोरी !!
****

ऋषि बिसेन

१७. आमरो देव सूर्यदेव

महर्षि कश्यप अना !
माय अदिति को से पुत्र !!
आमरो देव सूर्यदेव !!!

जगत ला प्रकाश !
अना जीवन ला देसे ऊर्जा !!
आमरो देव सूर्यदेव !!!

शकार अना दिवस !
रोज नवी करसे शुरुवात !!
आमरो देव सूर्यदेव !!!

जीवन को अंधकार !
दुःख की तपस ला हरसे !!
आमरो देव सूर्यदेव !!!

शक्ति को से पुंज !
भक्ति को से पुरो सागर !!
आमरो देव सूर्यदेव !!!

से सबको आत्मस्वरुप !
अना उत्पत्ति को से कारक !!
आमरो देव सूर्यदेव !!!

हर दिवस मा !
हर युग मा सबला देसे दर्शन !!
आमरो देव सूर्यदेव !!!

अर्ध्यदान देयकर हाथ !
जोड़न मा सदा होसे प्रसन्न !!
आमरो देव सूर्यदेव !!!

ऋषि बिसेन

पोवारी संस्कृति

पूर्वांचल को मोठो सन !
छठ मा भक्त गिन को अर्घ्य !!
लेसे आमरो सूर्यदेव !!!

जीवन को दर्द थकान !
मिटावनो मा सबला सोवनदेशे !!
आमरो देव सूर्यदेव !!!

वनस्पति को रोज को !
सयपाक बनावन को ईंधन !!
देसे आमरो सूर्यदेव !!!

भगवान श्री राम को !
इक्ष्वाकुवंश को आदि पुरखा से !!
आमरो देव सूर्यदेव !!!

बारिश को चक्र !
अना मानसून को चक्र बनावसे !!
आमरो देव सूर्यदेव !!!

सबकी आस्था को केंद्र !
प्रकाश ज्ञान अना ऊर्जा को देव !!
आमरो देव सूर्यदेव !!!
****

ऋषि बिसेन

१८. संस्कृत विश्वविद्यालय भोजशाला

धरम, आस्था, भाषा, साहित्य,
विज्ञान अना संस्कृति को केंद्र होतो भोजशाला ।
पंवार महाराज भोजदेव ना स्थापित करीन,
संस्कृत विश्वविद्यालय भोजशाला ॥

भोजशाला मा माय सरस्वती को दर्शन भयो,
उनको वरदपुत्र महाराज भोज ला ।
मा सरस्वती को दिव्य रूप वाग्देवी,
मूर्ति रूपमा स्थापित करीन राजा भोज ना ॥

माय सरस्वती की मधुर वीणा की ध्वनि,
लक् मिली चौसठसिद्धि भोजदेव ला ।
भोजशाला भयो हिन्दू जीवन दर्शन को,
अध्ययन अना प्रचार प्रसार को केंद्र मा ॥

चौदह सौ ज्ञानी आचार्य गिनना देईन ज्ञान,
विज्ञान अना अनुसंधान की शिक्षा ।
देश विदेश का विद्यार्थी गिनना लेईन,
शारदा सदन भोजशालामा शिक्षा दीक्षा ॥

दुराचारी आक्रांता ना आक्रमण लक,
भोजशाला ला नष्ट को करीन पापी प्रयास ।
वाग्देवी की प्रतिमा खंडित कर,
विश्वविद्यालय ला जरावन को भयो दुष्प्रयास ॥

जागो वीर हिन्दू जागो पुनर्निर्माण करबीन,
संस्कृत विश्वविद्यालय भोजशाला ।
वाग्देवी ला लंदन लक आनकन,
पुनर्स्थापित करबीन राजा भोज की भोजशाला ॥

****

ऋषि बिसेन

१९. महाराजा भोजदेव

हिंदुत्व को रक्षक,
धारानगरी को नरेश,
पंवार राजा भोजदेव ॥

राजा मुंज को वारिश,
जन जन को नायक,
जय राजा भोजदेव ॥

पोवार वंश को आराध्य,
सबका आती परमपूज्य,
सबको राजा भोजदेव ॥

गढ़कालिका को उपासक,
माय वाग्देवी को पूजक,
मोठा साहित्यिक भोजदेव ॥

महाकाल को परम भक्त,
चारो धाम ला नवीन रूप देयिन,
आमरो महाराजा भोजदेव ॥

भोजशाला को संस्थापक,
भोजताल को निर्माता,
सबको आराध्य भोजदेव ॥

निसर्ग का होतिन संरक्षक,
पापियों को संहारक,
प्रमारवंशीय भोजदेव ॥

सनातनी धरम को प्रचारक,
माय सरस्वती को पुत्र,
भारत नायक भोजदेव ॥

चक्रवर्तीय सम्राट,
विक्रमादित्य को वंशज,
मालवा नरेश भोजदेव ॥

****

ऋषि बिसेन

२०. महाराज लक्ष्मण देव पंवार

मालवा नरेश राजा उदियादित्य को बेटा,
चक्रवर्तीय महाराजा भोज को भतीजा ।
नगरधन नरेश लक्ष्मण देव पंवार ॥

धारानगरी होती जिनको जनम स्थली,
शास्त्र अना शस्त्र विद्या मा निपुण ।
नगरधन नरेश लक्ष्मण देव पंवार ॥

परमार रानी सोलंकनी देवी को बेटा,
दानवीर राजा जगदेव पंवार को भाई ।
नगरधन नरेश लक्ष्मण देव पंवार ॥

दस सौ सत्यासी मा भया मालवा नरेश,
सत्ता भाई नरवर्मन ला देय आया विदर्भ ।
नगरधन नरेश लक्ष्मण देव पंवार ॥

पूर्व अना दक्षिण को विजय पथ पर् गयीन,
त्रिपुरी अना विदर्भ मा भया विजयी ।
नगरधन नरेश लक्ष्मण देव पंवार ॥

नगरधन विदर्भ का भयीन पंवार राजा,
करीन मध्यभारत मा राज्य विस्तार ।
नगरधन नरेश लक्ष्मण देव पंवार ॥
****

ऋषि बिसेन

२१. जगदेव पंवार

क्षत्रिय योद्धा ज्ञानी अना दानी जगदेव पंवार ।
माय सोलंकनी देवी अजी उदियादित्य पंवार ॥

भाई लाई त्याग देयिन मालवा का राजपाठ ।
दानवीर की कथा गावसेती मालवा का भाट ॥

मालवा सोड भया वय चालुक्य का सेनापति ।
विदर्भ का राजा भयीन गड़चांदुर का अधिपति ॥

दक्षिण विजय अभियान मा हिटयो राजकुमार ।
कई क्षेत्र देय शिकस्त विजयी भया जगदेव पंवार ॥

धर पंवार पताका उत्तर मा गयीन जगदेव पंवार ।
हिमालय तक जीत कर देईन क्षेत्र ला संवार ॥

संवत ग्यारह इक्कावन चैततीज दिन रविवार ।
माय कंकाली ला शीशदान देईन जगदेव पंवार ॥

धरम कर्म लक होता वय प्रजा का रखवाला ।
आज भी पूज् सेती लोख कह देवता धारवाला ॥

****

ऋषि बिसेन

२२. मालवाधीश भोजदेव

धरम, ज्ञान अना भक्ति का पुरोधा,
मालवाधीश सेती भोजदेव महाराज ॥
धारा नगरी को राजा हिदुत्व को रक्षक,
चक्रवर्तीय सम्राट भोज राजधिराज ॥१॥

पिता होतिन उनका ज्ञानी बलशाली,
उज्जैनी को नरेश सिंधुराज जी प्रमार ॥
माय सावित्री देवी ना देईन भोज ला,
पिरम अन् ममता की न्यारी निहार ॥२॥

बालपन मा माय बाप कन लक मिली,
धरम अन् करम की साजरी शिक्षा ॥
गुरुकुल मा धर्मगुरु लक लेयात उनना,
शास्त्र की अन् शस्त्र की पूरी दीक्षा ॥३॥

भोजदेव न करी होतिन सदा सत्य, तथ्य,
ज्ञान की, विज्ञान की मोठी मोठी खोज ॥
जन मानुष का मोठो महानायक आती,
आमरो पंवारवंशीय महाराज भोजदेव ॥४॥

जनकल्याण अना सेवा को काज संग,
पापी को विनाश होता उनको धरम् ॥
धरती माय का जतन मा करीन उनना,
विकास न संशाधन संवर्धनको सत्कर्म ॥५॥

चारी धाम का पुनरद्धार कर खोलिन,
विद्या अन् ज्ञान की लगत पाठशाला ॥
वाग्देवी को उपासक भोज न खोलिन,
संस्कृत को विश्वविद्यालय भोजशाला ॥६॥

ऋषि बिसेन

संस्कृत अन् सनातनी संस्कृति का,
मोठा साहित्यिक, ज्ञानी अन् विद्वान ॥
कसो कर सकु मी एक कविता माच,
आमरो आराध्य भोजदेव को गुणगान ॥७॥
****

२३. हर पंवार मा बसी से महाराजा भोज

जन जन को से नायक,
भारतवर्ष का सेती महानायक,
महाराजा भोज...
पंवार को से आदर्श,
जीवन का सेती प्रियदर्श,
महाराजा भोज...
विद्यार्थी को से आदर्श,
ज्ञान का सेती उपासक,
महाराजा भोज...
हिंदुत्व को से पुरोधा,
धरम का सेती रक्षक,
महाराजा भोज...
क्षत्रियता की से मूरत,
ओजस्वी से वोनकी सूरत,
महाराजा भोज...
पंवार को देवता,
पोवार का मनमन्दिर,
महाराजा भोज...
भोजशाला को सृजनकर्ता,
सिहारपाठ बैहर की आत्मा,
महाराजा भोज...
क्षिप्रा की पावन धारा मा,
वैनगंगा की माटी मा बसी सेती,
महाराजा भोज...
हर उमर मा हर डगर मा,
हर पंवार मा बसी से,
महाराजा भोज...

****

ऋषि बिसेन

२४. पोवार इनको किला

मालवा का पंवार आया
नगरधन वैनगंगा को क्षेत्र मा !
राजा बुलंद बख्त न देईन इनला
मोठा मोठा किला, सुरक्षा को क्षेत्र मा...

छतीश कुर को पोवार गिनका
प्रथम पड़ाव नगरधन मा होतो !
प्रथम किला यव नगरधन का भेंट्यो
संग मा उनको पुरो परिवार भी होतो...

मराठा काल वरी मिल्यो
आम्बागढ़ अना लांजी को किला !
रामपायली का भयीन वय किलेदार
सानगढ़ी किला भयो पोवार इनको किला...

घोडा गाढ़ी धर कन आईन
मालवा को वीर क्षत्रिय पंवार !
युद्ध कौशल मा वय पारंगत होतीन
छत्तीश कुरका वीर, योद्धा अना घुड़सवार...

युद्ध कौशलमा होता पारंगत
छत्तीश क्षत्रिय कुल को संघ, पंवार !
भेट्यो इनला वैनगंगा क्षेत्र को उपहार
भया काश्तकार अना क्षेत्रला देईन संवार ...

****

ऋषि बिसेन

२५. देवघर

देवता को घर मा रहवास देवघर,
घर को संस्कार से यव पूज्य देवघर।

घर को केंद्र मा रह्वसे देवघर,
धरम की आस्था को केंद्र देवघर ।

देवघर मा रहसे आस्था की चवरी,
बिहाव मा पाव लगसेत नौरा नवरी ।

देव उतारन मा होसे देव की पूजा,
चघसे बड़ा, सुवारी, खीर संग गूजा ।

जीवती, अखाडी अना तीज को करसो,
देवघर मा हरदी चढ़ाव सेती जरसो ।

शराद मा करसेत ओढिल की याद,
यन् दस्तूर लक् मिलसे आशीर्वाद ।

महादेव को संग रहसे पांचपावली पूजा,
मोरो देव तोरो सिवाय नहाय कोनी दूजा ।

देवता को घर मा रहवास देवघर,
घर को संस्कार से यव् पूज्य देवघर।
****

ऋषि बिसेन

२६. संस्कृति को करबिन जतन

संस्कृति अना संस्कार को करबिन जतन ।
संस्कृति विहीन समाज को होय जासे पतन ॥
जागो पोवार जन् जागो संस्कृति ला बचाव ।
पोवार पंवार समाज बन जाहे देश को रतन ॥१॥

समाज ला पुरखा गिन् को अनुभव लेनो से ।
नवी पीढ़ी ला संस्कार की शिक्षा देनो से ॥
समाज ला विकास को पथ पर् लेय जानो से ।
राष्ट्र निर्माण मा समाज लक् सहयोग करानो से ॥२॥

पोवार पंवार समाज से उन्नतिशील समाज ।
येनो समाज लक् अखिन उन्नति करावनो से ॥
पुरो पोवार समाज ला खुशहाल बनावनो से ।
समाज ला पोवारी संस्कार लक् सजावनो से ॥३॥

समाज लक् मोठा मोठा अधिकारी बनावनो से ।
युवा पीढ़ी ला सब ऊजा अव्वल बनावनो से ॥
खेती बाड़ी मा नवी तकनीक अपनावनो से ।
पोवार समाज ला हर क्षेत्र मा अव्वल राखनो से ॥४॥

पंवारी की शान से क्षत्रियता की पहचान ।
क्षत्रियता को अज् मतलब से करम प्रधान ॥
पोवारी संस्कृति संग विकास देहे सबला मान ।
साजरो करम लक् बनहे पंवार समाज महान ॥५॥

****

ऋषि बिसेन

२७. छत्तीश कुर की एकता

मालवा राजपुताना लक् आया सेती,
वैनगंगा को पोवार पंवार ।
वैनगंगा की माटी मा बसकन,
देईन येन् पुरो क्षेत्र ला सँवार ॥

वीरता की भेट मा मिल्यो,
पावन वैनगंगा को क्षेत्र उपहार ।
खून पसीना लक् आनीन,
पोवार इनना येन् क्षेत्र मा बहार ॥

वीर पंवार, भंडारा, सिवनी अना
बालाघाट मा भया काश्तकार ।
कोनी बनीन उन्नत किसान अना
कोनी जमींदार जागीरदार ॥

किरसान भयीन पर् नहीं सोडिन,
आपरा क्षत्रिय संस्कार ।
सनातनी धरम को संस्कार संग,
भयीन क्षेत्र मा असरदार ॥

नगरधन लक् पंहुचीन, आम्बागढ़,
भंडारा, सिवनी, वीर पंवार ।
कटंगी रामपायली लांजी वारासिवनी मा,
बसीन आमरा पंवार ॥

सानगड़ी, साकोली, गोंदिया,
तिरोड़ा, आमगांव, किरनापुर ।
उगली, केवलारी, बरघाट,
संग गांव गांव मा बसीन पोवार ॥

ऋषि बिसेन

पोवारी संस्कृति

माय वैनगंगा को पावन क्षेत्र मा
फ़ैल गयीन क्षत्रिय पंवार ।
पुरो क्षेत्र को छत्तीश कुर मा दिससे
एकच पोवारी संस्कार ॥

अज् को सिवनी भंडारा
गोंदिया अना बालाघाट का पंवार ।
आपरो ज्ञान अना करम लक्
वैनगंगा क्षेत्र ला देईन सँवार ॥
****

ऋषि बिसेन

२८. पंवार अना नगरधन

विदर्भ की पुरातन नगरी होती नगरधन ।
पहिले जूनो नाव होतो येको नन्दिवर्धन ॥

नगरधन मा भयीन कई वंश को शासन ।
ग्यारहवीं शदी मा होता इत् पंवार राजन ॥

नगरधन मा होतो पंवार राजा लक्ष्मणदेव ।
पुरखा उनका चक्रवर्तीय सम्राट भोजदेव ॥

मालवा का महाराजा होता क्षत्रिय पंवार ।
पंवारी की शान अन् वैभव मा शुमार ॥

धोको लक दुश्मन न झिकिन राजपाठ ।
पर सोडिन नही आपरो पंवारी ठाठ-बाठ ॥

नगरधन आय के बस्या क्षत्रिय पंवार ।
राजा बुलंद की सेना ला देयिन संवार ॥

पुरातन किल्ला का भया क़िल्लापति पंवार ।
मराठा शासन मा भी शामिल होया पंवार ॥

कटक युद्ध मा विजय का नायक पंवार ।
वैनगंगा का क्षेत्र भेट्या विजय को उपहार ॥

नगरधन सोड़ बस्या वैनगंगा को तीर ।
वैनगंगा नदी पावन जसो गंगा को नीर ॥

शस्त्र सोड़ पंवार भया मेहनतकश किसान ।
काश्तकारी भयी आता पोवारी को शान बान ॥

ऋषि बिसेन

पहचान भयी नवी, नगरधन वैनगंगा पंवार ।
आपरो मेहनत लक् येनो क्षेत्र ला देइन संवार ॥

नगरधन को किला मध्यभारत की से शान ।
क्षत्रिय पोवार वंश की से जीवंत यव् पहचान ॥
****

२९. पंवार तीरथ् सिहारपाठ बैहर

सिहारपाठ पहाड़ी पर से प्रभु श्रीराम को मोठो मंदिर ।
आमरो पुरखागीणना १९१२ मा तैयार करीन यव् मंदिर ॥

पंवार समाज को मोठो तीरथस्थल बैहर को सिहारपाठ ।
दिससे अवार मा धरम, संस्कार संग पोवारी ठाठ बाट ॥

सिहारपाठ को दर्शन लका होसे तीरथ् की शुरुवात ।
देड़ सौ सीढ़ी चगकर होसे राजा भोज संग मुलाकात ॥

हनुमानजी को पुरातन मंदिर यन्जया बड़ों सुन्दर ।
पहाड़ी पर् इत्-उत् क़ुद सेत प्रभु का बाल सखा बन्दर ॥

श्रीराम मंदिर को जवर से महामाया को मंदिर ।
पहाड़ी वरया मैदान बनया भाव भवन कृति सुंदर ॥

पहाड़ को मंच, सभागृह मा होसेत सामाजिक गोष्ठी न्यारी ।
पहाड़ी परा से मीठो पानी की बहुतच खोली बेहर जलधारी ॥

पहाड़ी को एक आंग बैहर का घर आंगन बंगला ।
दूसरो आंग चोवसे सतपुड़ा को सुन्दर घनो हिवरो जंगला ॥

पहाड़ी को चौफेर सजी घुमावदार सुन्दर सड़क ।
रस्ता मा मोठा मोठा प्राणी देख्र कलेजा जासे धड़क ॥

समिति करें रामनवमी को जत्रा हर बरस ।
दूर-दूर लक भोजवंश करसेत् तीरथदरश ॥

पंवार सम्राट भोजदेव की मोठी मूर्ति से सबकी शान ।
सिहारपाठ से क्षत्रिय पोवार वंश की जुनि पहचान ॥

ऋषि बिसेन

पोवारी संस्कृति

पंवार तीरथ सिहारपाठ की छँटा से निराली ।
मनमोहक मंदिर को दर्शन लक भेट से खुशहाली ॥

हर पोवार को बनी से धरम जायेति सिहारपाठ तीरथ् ।
पोवारी सनातनी संस्कार लका सजी धजी से पावन मूरत ॥
****

ऋषि बिसेन

३०. पोवार (पंवार) का छत्तीश कुर् को इतिहास

छत्तीस क्षत्रिय को समूह आय,
वैनगंगा क्षेत्र मा बस्या क्षत्रिय पोवार पंवार ।
मालवा राजपुताना ल लक् आयकन ईत् ,
नगरधन वैनगंगा क्षेत्र ला पुरो देईन संवार॥

अम्बुले आती कमलरूप सुकुमार बीर अम्बुलिया;
डाला आती शाखा प्रमुख राजपूत डालिया ।
टेम्भरे आती दीपसिखा टेम्भरिया;
सहारे सेती तेजस्वी आश्रयदाता क्षत्रिय सहारिया ॥

हरिनखेडा आती आखेटी वीर योद्‌धा;
सोनवाने जिनको गौर वर्ण सोनोवाणी आती सोनवाण्या ।
कोल्हिया आती बाहुबली वीर कोलिया क्षत्रिय;
बोपचे आती वाक्पटु राजपुताना का बोपचिया ॥

गौतम आती न्यायप्रिय ब्रह्मक्षत्रिय;
बघेले आती बघेलखण्ड का बघेलिया राजपूत ।
पटले आती पट्‌टप्रमुख पट्‌टाधारी क्षत्रिय;
कटरे आती कटार धारी कटारिया राजपूत ॥

ठाकुर ठाकरे आती राजपुताना को ठाकुर;
बिसेन आती विश्वपति विश्वेन क्षत्रिय ।
चौहान आती अग्निवंशीय क्षत्रिय चौहान;
परिहार सेती प्रतिहारी अग्निवंशीय क्षत्रिय॥

जैतवार आती विजयी जैतवा राजपूत बीर;
चौधरी आती ग्राम प्रमुख वीर क्षत्रिय ।
पारधी आत राजपुताना को शिकारी योद्‌धा,
तुरकर सेती अश्वारोही तुरुक क्षत्रिय परमार ॥

भगत सेती जगदेव पंवार को भक्तवरती वंशज;
पुण्ड आती तिलकधारी पुंडीर राजपूत ।
भैरम आती भीषण ललकार देनेवाला क्षत्रिय;

पोवारी संस्कृति

येडे आती हाड़ा क्षत्रिय जिनकी हड्डी बड़ी मजबूत ॥

फरीद को मानने वाला कहलाया फरीद;
दयालु जिनकी सोच वय कहलाया रहमत ।
राहंगडाले आती वंशज राजा रंधौला रणधवल का;
रिनायत आती रण हन्ता राणावत ॥

रंजहास अना रन्दीवा होता ३६ कुर मा शामिल,
जिनको आब नही मिल निशान ।
हनवत क्षत्रिय को हाथलका होत होतो शत्रु को अंत;
भोयर आती भोयेर कूलवाला ॥

शरणागत शरण मा आया ला देत् होता संरक्षण;
क्षीरसागर क्षत्रिय गोरा भरारा दूध को जसो सागर ।
रावत सेती उत्तर भारत का वीर राजपूत;
राणा आती राजपुताना को वीर राजवंशीय क्षत्रिय ॥

पोवार पंवार का छत्तीस कुर् सेती
मालवा राजपुताना को अलग अलग क्षेत्र का वीर क्षत्रिय ।
छत्तीस क्षत्रिय को समूह आय
वैनगंगा क्षेत्र मा बस्या क्षत्रिय पोवार पंवार ॥

****

ऋषि बिसेन

३१. मोरो गणपति देवा

आशीष मिली से तोला होवन को प्रथमपूज्य देवा !
नवी शुरुवात मा लेशती तोरो नाम अय मोरो देवा !!

असो तु हर पल कर् सेजन याद तोरी गणपति देवा !
पर् गणेश चतुर्थी मा होवसे विशेष पूजा मोरो देवा !!

गणेश चतुर्थी ला घरमा तोरो आगमन होसे देवा !
जीवन मा होसे मोठी तरंग न उल्लास मोरो देवा !!

टुरु पोटु ल सदा बड़ो प्रिय से आमरो गणेश देवा !
येनो बरस भी कर रही सेत वय् पूजा मोरो देवा !!

बिनती करुसु मि देय समृद्धि सबला मोरो देवा !
पुरो धरा ला देय हरियाली न् खुशहाली मोरो देवा !!

येनो बरष मा फैली सेय यव जानलेवा कसो रोग !
मिटाय देय येला न कर खुशहाल सबला मोरो देवा !!

दस दिवस की सबकी प्रार्थना ला सफल कर देवा !
हर पल होसे तोरी अर्चना मोरो प्रभु गणपति देवा !!

येनो दिवसमा मूरतरुप मा तोला पासेजन मोरो देवा!
जावन को तोरो बेरा जवरसे आता मोरो गणेश देवा !!

पर आवनवाला बरषमा अखिन आवजोश मोरो देवा!
असी आशला राखकर अखिन बाट जोहु मोरो देवा !!

****

ऋषि बिसेन

३२. डोकरी पूजा

दीवारी मा पोवारी को सन् से डोकरी पूजा ।
गोवर्धन पूजा को दिवस रहोसे डोकरी पूजा॥

गायी को गोबर की बनावसेजन यव् डोकरी ।
रहोसे सील चूल्हो, जाता अन् पांच डोकरी ॥

पीठ को चवक मा बससेती सब डोकरी ।
खीर जनाय कन् पूजी जासेती डोकरी ॥

घर को कामकाज ला मान देवन को सन् ।
डोकरी को काम धंधा की पूजा को सन् ॥
****

ऋषि बिसेन

३३. दीवारी को सन्

दीवारी आय गयी अन् ख़ुशी छाय गयी ।
टुरु पोटू गिनला घर की रौनक भाय गयी ।।

दिवो की रौशनी लक् चमक् से पुरो घर ।
बिजली की झालर लक् सजसे गाव शहर ।।

श्रीराम लक्ष्मण सीता को आवन की यादि ।
सब ऊजा रौनक खुशियाँ छायी से अनादि ।।

पीठ को बने गायखुरी को सुनदर चवक् ।
गुजिया खीर मिठाई की रहे घर मा महक् ।।

सब रोज होय जाहे शकारीच् सड़ा सरावन ।
आहेति गोवारा सन् मनावन न् मंडई भरावन ।।

पांच दिवस को से दीवारी को यव् मोठो सन् ।
दिससे त्योहार मा पोवारी संस्कार की लगन् ।।

माय लक्ष्मी संग होसे बली अन् डोकरी पूजा ।
त्योहार मा बनसे खीर पूड़ी सुकुड़ा अन् गुजा ।।

दिवो को दिव्यप्रकाश मा मिट जासे पुरो ईंधारो ।
माय लक्ष्मी धर सुख समृद्धि मोरो घरमा पधारो ।।

****

ऋषि बिसेन

३४. भारतवर्ष की सभ्यता

ऐतिहासिक सभ्यता का धनी,
महान संस्कृति भारतवर्ष माच बनी।
दुनिया की संस्कृति ईत् आयकन् रमी।।

पिरम अन् सहिष्णुता की से माटी,
पुरो देशमा सेती वीरता की घाटी।
कसो भुलावबीन आमी हल्दीघाटी।।

हिमालयदेसे रक्षामुकुट अन् दवाई,
हिन्द महासागर करसे पाव धोवाई।
गंगा जमना नर्मदा करसेती सिंचाई।।

सेती मोठी मोठी सांस्कृतिक धरोहर,
सभ्यता का पोषक नदी अन् सरोवर।
विविधतामा सेती सब मनलक जवर।।

लगत मोठो से आमरो देश भारतवर्ष,
सनत्योहार को सदारहसे सबला हर्ष।
ख़ुशी लक् मनाव सेती जसो नववर्ष।।

भारत मा सेती लगत सभ्यता संस्कृति,
पुरातन संस्कार करसे दूर सब् विकृति।
भारतवर्ष की से यव् मनमोहक आकृति।

आमरो भारतवर्ष से सब् लक् महान,
मी लिखन वाला सेव् नहान सो नहान।
सांगो मी कसोकर सिकु येको गुणगान।।

****

ऋषि बिसेन

३५. होरी को सन्

आय गयो रे आय गये,
रंग को मनमोहक होरी को सन् !
बंसतोत्सव को देख यव् सन्,
खुश भयो मोरो मन !!

फाल्गुन को येनो महीना मा,
हासी ख़ुशी को सन् होरी !
रंग को रंग मा रंग जासे
हमरो जीवन खेलबीन रे होरी !!

प्रभु की भक्ति को रंग मा,
रंगयो होतो हरीभगत प्रह्लाद !
असत्य की होलिका जर गयी,
बच गयो यो भगत प्रह्लाद !!

पाप ला ईशतो मा जरावन को,
यव सन् होलिका दहन !
दुसरो रोज सब मनावसेजन होरी,
रंग गुलाल मा होय मगन !!

परसा फूल को ईशतो वानी रंगमा,
धरती की छटा होसे रंगीन !
होरी को सन् मा होसे सबदुन रंगीन,
कोई नहीं रह कही गमनीन !!

आनो सबझन गुलाल अन् रंग,
खेलबीन सब मिलकन होरी !
सब संगी साथी मिटाव देव
मन् को भेद अन् खेरो अज् होरी !!

ऋषि बिसेन

पोवारी संस्कृति

आखर मा होरी जरावन को संग,
होसे शुरु होरी को तिव्हार !
गाव की होरी जसी मथुरा की होरी,
होसे रंग को असो साजरो ब्योहार !!

बढुला की राखड़ को तिलक मा,
ख़ुशी बाटन को रिवाज !
पिरम अना धरम को संग मा,
नाच गाय कन् मानोसेजन तिवहार !!

फगुवा गावन ला घर घर जासेति,
सब युवा गिनकी मोठी टोली !
करनजी पापड़ी को संग मिठाई माला,
खावता कर् सेती सब ठिठोली !!

गुलाल को रंगीन रंग मा रंग भरदेसे,
फ़ागुन को यव् सन् तिव्हार !
बताशा की मिठाई माला को जसो
गोड़ वानी कर आनसे बहार !!
****

ऋषि बिसेन

३६. मोरो भारत देश

मोरी माटी मोरो यव् देश,
सबको से यव् गौरव ,
मोरो भारत देश ..

सबलक ऊपर से यव् देश,
गर्व से अय मोरो देश,
मोरो भारत देश ..

विविधता भरयो यव् देश,
विविध रंग को से यव् देश,
मोरो भारत देश ..

मोठी नदियों को यव् देश,
हिमालय को यव् देश,
मोरो भारत देश ..

सागर लक धिरयो यव् देश,
हिम को मुकुट को यव् देश,
मोरो भारत देश ..

विविध बोली भाषा को यव् देश,
विविध धरम को यव् देश ,
मोरो भारत देश ..

विविधता मा एकता को यव् देश,
प्रजातांत्रिक से यव् देश,
मोरो भारत देश ..
****

३७. प्रेरक आमरो अतीत् महान

संस्कार कसे की मान राखनो से आपरो अतीत् को॥
अतीत् कसे की भूलनो नोको वोला याद राखनो से॥
बीतयो आमरो अतीत् को मान अज् को संस्कार से॥

अज् को संस्कार पालन भयो त् भविष्य को निर्माण से॥
भविष्य निर्माण को आधार आमरो अतीत को मान से॥
संस्कार यो सही कसे की अतीत् को मान राखनो से॥

साजरो भविष्य निर्माण लाई अतीत् लक् सिख लेवनो से॥
आमी आजन क्षत्रिय पोवार, महान आमरो अतीत् से॥
अज् को बेहतर सपन लाई, काज प्रेरक यव् अती त् से॥

ज्ञान धरम मा बहुतच शिक्षाप्रद होतो आमरो अतीत्॥
आता जाग जा पोवार भाउ अन् कर असो महान करम तू॥
अतीत को गौरवशाली इतिहास लक धर साजरी प्रेरणा॥

अज् ला बनाय दे असो महान जसो आमरो अतीत् महान॥
हे माँ गढ़काली दे एतरो बल आमी क्षत्रिय पोवरजन ला॥
महान करबिन आज जसो होतो आमरो अतीत् महान॥

****

ऋषि बिसेन

३८. पृथ्वी तणा पंवार

हाम्रो पोवार भाऊ सेती,
वीर क्षत्रिय पंवार ।
हामरी पोवारिन बाई सेती,
वीरांगना क्षत्रानी ।।

सब मिलकन् करसेती,
दुश्मन ला सब ऊजा चित् ।
क्षत्रिय वार लका चित् पापी,
नहीं मांग सिक् पानी ।।

क्षत्राणी माय को आशीर्वाद,
लेय चल्यो क्षत्रिय वीर ।
मोठा मोठा रण मा,
विजयी भया पंवार शूरवीर ।।

क्षत्राणी पत्नी को तिलक की,
शक्ति अना भक्ति ।
वीर क्षत्रिय पंवार,
धरमयुद्ध जीत भया धरमवीर ।।

पृथ्वी को अन्याय,
मिटावन लाई आया पंवार ।
पाप को नाशकर,
धरती ला देइन वोय संवार ।।

पृथ्वी को शोभा,
कह्यो जासेती क्षत्रिय पंवार ।
स्वर गूंजसे पृथ्वी तणा पंवार,
पृथ्वी तणा पंवार ।।

ऋषि बिसेन

पोवारी संस्कृति

भारतवर्ष मा कई ऊजा,
बसी सेती क्षत्रिय पंवार ।
आबूगढ को यज्ञवेदी लक्,
प्रगट भया वीर प्रमार ।।

गुरु वशिष्ठ को आशीर्वाद मा,
रंगया सेती पंवार ।
वीर प्रमार का वंशज सेती,
क्षत्रिय पोवार पंवार ।।
****

ऋषि बिसेन

३९. मातामाय

मातामाय को जवर खेलन की जाग्हा !
शिखन की जाग्हा संस्कार की जाग्हा !!

गाव की शान धरम की संस्कार धानी !
मातामाय रहोसे देव धामी की निशानी !!

पीपल की सावली से ठंडक जीवन की !
पीपल मा आस्था से सनातनी धरम की !!

देवी माय को वास से आमरी मातामाय !
देसे सुख समृद्धि पुरो गावला मातामाय !!

चैतनवरात्री मा सामूहिक जवारा रहोसे !
अखाडी मा पुजा माता माय की होवसे !!

रोज श्याम मा दिया राखोसे बाबा पंडा !
लहराओ से माता माय मा भगवा झंडा !!

बुजरुग ईत् बसकन कर् सेती बिचार !
गोष्ठी लक् टुरु पोटू सिख सेत् संस्कार !!

बिवाह मा चड़से माता माय ला हरदी !
रहोसे जवरपास गाय बासरु की बरदी !!

नवरदेव नौरी लेसेत देवीको आशीर्वाद !
कर् सेती वोय नवो जीवन को शुरुवात !!

मातामाय को जवर खेलन की जाग्हा !
शिखन की जाग्हा संस्कार की जाग्हा !!

****

ऋषि बिसेन

४०. पंवार (पोवार) की महिमा

मालवा की संस्कारधानी, उज्जैनी अन् धार,
राजकरण लाइ मध्यभारत, आया आमी पंवार ॥

क्षत्रिय वंश की आन अन् राजपुताना की शान,
दुश्मन ला मिटाय देईन, नहीं सह्या अपमान ॥

येक हाथ मा तलवार दूजो हाथ मा ढाल,
पंवार को वार लक् दुश्मन भया निहाल ॥

वैनगंगा की पावन धार पंवार भया काश्तकार,
धरकन आया पोवारी बोली अन् संस्कार ॥

पंवार होता बुलंद बख्त अन् मराठा को संग,
क्षत्रिय वीरता देख इनकी सब भया दंग ॥

छत्तीश कुर मा चघयो पोवारी संस्कृति को रंग,
दुश्मन भया चित्त, देख क्षत्रिय पंवार दबंग ॥

****

ऋषि बिसेन

४१. पोवारी दर्शन

मातामाय जवर की पूजा,
अखाडी मा नवी बहु का बान बाटनो,
सबलका आशीर्वाद लेवनो,
पोवारी संस्कार ......

पांच पोवारी कुर को आमंत्रण,
आखा तीज को करसा भरन को दस्तूर,
खेत मा पूजा लक् खात की पेटी बांधनो,
पोवारी संस्कार ......

आखर मा जोड़ी को छुट्नो,
पोला मा किसान मित्र बईल की पूजा,
टोरु पोट्टु का सबको पाय लग आशीर्वाद लेवनो,
सामाजिक संस्कार ......

जीवति अन् हरियाली की पूजा,
संजोरी पूजा अन् खरियान की पूजा,
किसानी को सन् अन् नांगदेव की पूजा,
खेती बाड़ी का संस्कार......

देवधामी की पूजा,
बिहाव मा पाहुना को मान,
बुवा बेटी अना दामाद को सम्मान,
बिवाह को संस्कार ......

मरनो मा मायघर को कोशारा,
पँचलकड़ी को दस्तूर, बाजार को नेंग,
घट जागनो, पिंडदान अन् मुंडन होवनो
मृत्यु को बाद का संस्कार......

ऋषि बिसेन

पोवारी संस्कृति

होरी, दीवारी, दशहरा, राखी,
नवरात्री, क़ानूबा, गणपति पूजा,
तुलसी विवाह, पोला जसा सन् मानोसेती पोवार
हिन्दू धरम को संस्कार......

ढेंढा रोटी, चौथिया बारात, बलिपूजा
लाखतोखाड़ को खाजो, पांचपावली पूजा,
देवघर की चवरी, दसरा की मयरी, डोकरी पूजा,
पोवारी को संस्कार......
****

ऋषि बिसेन

४२. पंवारी स्वाभिमान

मोरी माय को पोवारी संस्कार,
अजी का से पंवारी स्वाभिमान ।
पंवार को से क्षत्रिय धरम,
पंवारी को से हमला स्वाभिमान ॥१॥

गाव मा दिससे पोवारी शान,
पोवार समाज से धर्मवान ।
क्षत्रिय संस्कार की दिनचर्या,
पंवारी को से हमला स्वाभिमान ॥२॥

मेहनती आती पोवार जन्,
खून पसीना येक करसेती कर्मवान ।
मेहनतच से पोवार की पूजा,
पंवारी को से हमला स्वाभिमान ॥३॥

राजा भोज अन् जगदेव सेती आराध्य,
माय गढ़कालिका को उपासक ज्ञानवान ।
पुरखा होतीन सम्राट विक्रमादित्य,
पंवारी को से हमला स्वाभिमान ॥४॥

पंवार को बाहुबल मा से दम,
दिससेती साजरा हस्टपुष्ट बलवान ।
दिससे धारानगरी को जुनो वैभव,
पंवारी को से हमला स्वाभिमान ॥५॥

****

ऋषि बिसेन

४३. पंवार (पोवार) महान

आमी पंवार हामरो अतीत महान,
पुरखा गिनना जीतिन दुनिया जहान ।
पोवारी संस्कार सीख रह्या सेती टुरु नहान,
आमी पंवार हामरो अतीत महान ॥१॥

शास्त्र अन् शस्त्र का ज्ञाता पंवार,
दुश्मन को करत होतीन जीवन दुश्वार ।
अग्निकुंड की वेदी लक् प्रगट भयो प्रमार,
शास्त्र अन् शस्त्र को ज्ञाता पंवार ॥२॥

उन्नत कृषि को महारथी क्षत्रिय पंवार,
माय वैनगंगा को आँचल मा बसीन पोवार ।
ज्ञानवान सेजन, नहीं आजन कोनी गंवार,
उन्नत कृषि को महारथी क्षत्रिय पंवार ॥३॥

छत्तीश कुर् का आमी आजन क्षत्रिय पंवार,
पोवारी संस्कार मा रंगीसेजन आमी पोवार ।
वैनगंगा को पावन क्षेत्र मा बसीन पंवार,
छत्तीश कुर् का आमी आजन क्षत्रिय पंवार ॥४॥

संस्कार विचार का धनी आमी पंवार,
माय वाग्देवी कालिका को उपासक पंवार ।
माय वैनगंगा को पूजक क्षत्रिय पंवार,
संस्कार विचार को धनी आमी पंवार ॥५॥

****

ऋषि बिसेन

४४. पोवारी से बोली मोरी

पोवारी से बोली मोरी ।
पोवारी हामरो संस्कार ॥
पुरखा गिनना देई सेती ।
इन ला साजरो आकार ॥१॥

हामरो सब नेंग न् दस्तुर ।
मोठा नाहना सनतिव्हार ॥
हिंदुत्व का आरसा सेती ।
हामरो पोवारी संस्कार ॥२॥

खेती संग पढ़नलिखन मा ।
बढ़ रही से हामरो समाज ॥
संस्कारी हामरो समाज को ।
होय रही से सपन साकार ॥३॥

बेटा बेटी मा काई फर्क ।
नहीं कर् हामरो समाज ॥
मातृ शक्ति को पूजक से ।
सनातनी पोवारी संस्कार ॥४॥

करबीन आमी पुरो जतन ।
ठेवन मा आपरी पहचान ॥
हर पल मा मददगार सेती ।
हामरो या पोवारी संस्कार ॥५॥

****

ऋषि बिसेन

४५. ज्ञानी पंवार

पुरखा होतीन आमरा,
ध्यानी अन् ज्ञानी पंवार ।
ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान लक्
देईन देशला संवार ॥

धरम का संरक्षक पृथ्वी का रक्षक,
आती क्षत्रिय पंवार।
कसेत पृथ्वी सम्राट पंवार,
पृथ्वी को शोभा पंवार ॥

आबूगढ लक् प्रगट भया,
अग्निवंशीय क्षत्रिय पंवार ।
असत्य ला मिटायकर सत्य ला,
जिताय देईन पंवार ॥

देश को कोना कोना मा,
फैलीन मालवा को पंवार ।
वैनगंगा क्षेत्र ला कृषि प्रधान,
बनायीं सेती पंवार ॥

सिहारपाठ मा मोठो तीर्थ,
को निर्मान करीन पंवार ।
रामपायली राममंदिर,
को किलापति होतीन पंवार ॥

पोवारी बोली मा बोलनवाला,
छत्तीश कुर् का पंवार ।
पोवारी संस्कृति ला,
जीवन वाला संस्कारी पोवार ॥

****

ऋषि बिसेन

४६. पोवार महासंघ

धरम का रक्षक, निसर्ग का संरक्षक,
पोवारी संस्कार..

साजरी प्यार, सबलक् से न्यारी,
मायबोली पोवारी..

क्षत्रिय वैभव, मालवा को शान,
क्षत्रिय पंवार..

पंवार तीरथ् स्थान, समाज को स्वाभिमान,
सिहारपाठ बैहर..

विदर्भ को मान, पोवार की शान,
नगरधन किल्ला..

हिंदुत्व का संरक्षक, भारतवर्ष का रक्षक,
महाराज भोजदेव..

किसानी की पोषक, मध्यभारत की गंगा,
माय वैनगंगा..

३६ कुर् को संघ, रहेती सदा अभंग.
पोवार महासंघ..
****

ऋषि बिसेन

४७. मायबोली पोवारी

पोवार पंवार की से मायबोली पोवारी ।
सबलक् से पियारी मायबोली पोवारी ॥

आमरो हिरदय मासे मायबोली पोवारी ।
शिखनो से पोवारी बोलनों से पोवारी ॥

छत्तीश कुर् की बोली से आमरी पोवारी ।
पुरखागिन को मान प्रतिष्ठा से पोवारी ॥

करनो से जतन मायबोली पोवारी को ।
करनो से सृजन पोवारी साहित्य को ॥

ठेवनो से पोवार की संस्कृति पोवारी ।
बचावनो से पंवार को संस्कार पंवारी ॥

होये अमर आमरी मायबोली पोवारी ।
आमरो मान सम्मान संस्कार पोवारी।॥

****

४८. वीर पंवार (पोवार)

क्षत्रिय तलवार को धार
करसे पापी को सीना पार
देख दुश्मन थर थर कापसेती
जब ऊभो होसेत् वीर क्षत्रिय पंवार

गुरु वशिष्ठ ना पेटाइस
अग्निकुंड मा यज्ञ की ज्वाला
प्रगट भयो यज्ञ मा क्षत्रिय पंवार
अंधकार मिट्यो फइल गयो उजियाला

गुरु भृतहरि को ज्ञान
मिटावासे धरा को अज्ञान
राजा भोजदेव होता साहित्यकार
लेखनी का विषय धर्म शिक्षा विज्ञान

राजा मुंजदेव की वीरता
सम्राट विक्रमादित्य को न्याय
राजा मुंजदेव अन् वीर शियाक
मिटाय देईन भारतवर्ष को पुरो अन्याय

प्रमार वंशीय आती
आमी क्षत्रिय पोवार पंवार
पंवारी को शान मा चोवोसेती
अग्निवंशीय भोजवंशीय पोवार पंवार
****

ऋषि बिसेन

४९. पर तुमना काय लाई सोड्यत पोवारी....

शिक्षा लेयत, बेस से !
आधुनिक भया, साजरो से !
पर तुमना काय लाई सोड्यत पोवारी....

खेती सोड्यत, बेस से !
शहर मा बस्यो, साजरो से !!
पर तुमना काय लाई सोड्यत पोवारी....

वेशभूषा बदली, बेस से !
अंग्रेजी शिख्यत, साजरो से !!
पर तुमना काय लाई सोड्यत पोवारी....

दस्तूर कम भया, बेस से !
रूढ़िवाद सोड्यत, साजरो से !!
पर तुमना काय लाई सोड्यत पोवारी....

एकल परिवार बनीन, बेस से
कमावन लाई बाहर गयत, साजरो से
पर तुमना काय लाई सोड्यत पोवारी....
****

ऋषि बिसेन

५०. पोवारी आदर्श

क्षत्रियता को शौर्य से, वीरता को बाहुबल
मेहनती पंवार जन
पोवारी आदर्श ....

कम खर्चा सादगी, धार्मिक सात्विक
सनातनी हिंदुत्व
पोवारी आदर्श ....

निसर्ग को पिरम्, माटी को पुत्र
शास्त्र को ज्ञाता
पोवारी आदर्श.........

पोवारी बोलन वाला, दस्तूर का मान
पुरखाइन का सम्मान
पोवारी आदर्श.........

ज्ञानी अन् विज्ञानी, माय बाप को भक्त
देवी का उपासक
पोवारी आदर्श.........

निर्मलता को मन्, सहृदय विचार
धरम को संस्कार
पोवारी आदर्श.........
****

ऋषि बिसेन

५१. लिखो पोवारी बोलो पोवारी

पोवारी बोली पुरखाइन की बोली,
हामरो संस्कार हामरी मायबोली।
आओ भाऊ आओ बाई सबझन,
मिलकन गावबिन पोवारी गाना ॥१॥

ज्ञान की भाषा विज्ञान की भाषा।
पोवार पंवार को अभिमान की भाषा।
पोवारी पंवारी से स्वाभिमान की भाषा,
जीवित रहे सदा पोवारी यव् से अभिलाषा ॥२॥

पोवारी ला गुरु वशिष्ठ को आशीष से,
अग्निकुंड को अग्निवंशीय वैभव से।
पोवारी मा क्षत्रिय वंश को संस्कार से,
पोवारी ला माँ वाग्देवी को आशीर्वाद से ॥३॥

लिखनो से पोवारी पढ़नो से पोवारी मा,
संजोनो से आमरो इतिहास ला पोवारी मा।
आबूगढ लक् मालवा, मालवा लक् नगरधन,
नगरधन लक् वैनगंगा की धार पोवारी मा ॥४॥

रहेती छत्तीश कुर् को पोवार धरती मा,
बोहात रहे माय गंगा की धार वैनगंगा मा।
जब् वरी रहेती सूरज चंदा धरती मा,
तब् वरी जीवित रहे पोवारी धरती मा ॥५॥

****

ऋषि बिसेन

५२. पोवारी पुष्पांजली

पोवारी मायबोली को सुन्दर पुष्प को हार ।
यव् से साजरो पंवार पोवार वंश को उपहार ॥

पंवार की बिंदी अन् चंद्र सेती वंश का शौर्य ।
पोवार की ओ की मात्रा से ओंकार देव सौर्य ॥

पोवारी रूपी पुष्प से पुरखा इन को बिचार ।
शब्द मा शब्द जुड़ कन् बन् जासे पुष्पाहार ॥

साजरा सुन्दर शब्द सेती हामरी पोवारी को ।
सुननो मा कर्णप्रिय होसेती शब्द पोवारी को ॥

पोवारी की पुष्पांजली से संस्कार को कन कन ।
साजरो पुष्पांजली मा हर्षित से पोवार जन जन ॥

पोवारी की गोष्ठी सुन उल्लासित होसे मन् ।
सुन असो लगसे जसो आय पोवारी को सन् ॥

वैनगंगा क्षेत्र आयकन् आमरो पुरखा भया किसान ।
पोवारी संस्कार को संग सदा रहीन साजरा इंसान ॥

सन् तिवहार नेंग दस्तूर मा पोवारी की रहसे गीतांजली ।
मीठो गोढ़ गीत लक् बनसे साजरी पोवारी पुष्पांजली ॥
****

ऋषि बिसेन

५३. संस्कारी पोवारी आवाज

पोवारी संस्कार सेती पुरातन सनातनी संस्कार !
पोवारी नेंग दस्तूर को सेती वैज्ञानिक आधार !!

पुरखा हामरो देवत होतिन सही तार्किक विचार !
पोवारी संस्कार सिखाव सेती साजरों व्यवहार !!

हिन्दु सनातनी धरम को आधार से वैदिक शिक्षा !
शास्त्र न् शस्त्र मा निपुण भय पंवार लेसेती दीक्षा !!

मोक्ष मिलन की चाहमा कर् सेती साजरो करम !
पोवारजन निभावसेती जीवन पर् सनातनी धरम !!

सावन मासमा पोवार पंवार पढ् सेती रामायन !
धरम संस्कार का भान करावोसेती पोवारी गायन !!

पुरखा गिनना करिसेती नेंग दस्तूर का पूरो जतन !
संस्कारी रहोसेती पोवार मोठागन अन् नाहनागन !!

ठेवनो से शिखावनो से सबला पोवारी रीतिरिवाज !
गुँजत रहे सदा दुनियामा संस्कारी पोवारी आवाज !!

****

ऋषि बिसेन

५४. पोवार/पंवार जन् की वाणी पोवारी

पोवारी बोली से पंवार पोवार की शान ।
लिखो बोलो पोवारी मा योव से आह्वान ॥

पोवारी बोली पुरखा हिन्की विरासत ।
बोलो त् सही पोवारी कोई नहीं हाशत ॥

पोवारी बोलनों योव से पोवारी संस्कार ।
कसो कर् सिकसे कोई येको तिरस्कार ॥

नेंग दस्तूर की बोली से आमरी पोवारी ।
देवघर को देवतुल्य से संस्कारी पोवारी ॥

मोठागन को पंवारी शौर्य से योव पोवारी ।
नहानागन की शान से हामरी योव पोवारी ॥

गूढ़वानी मीठी अन् कर्णप्रिय से पोवारी ।
माय गढ़कालिका को आशीर्वाद पोवारी ॥

धारानगरी माय पोवारी की जन्मभूमि ।
वैनगंगा की माटी पोवारी की कर्मभूमि ॥

कसो भुलाय सिकसु मोरी पहचान पोवारी ।
मोरो मान सम्मान अन् संस्कार पोवारी ॥

पोवार पंवारजन की वाणी से योव पोवारी ।
बिनती से मोरी बोलो अन् लिखो पोवारी ॥

****

ऋषि बिसेन

५५. पोवारी से आमरो संस्कार

पोवारी से आमरी मायबोली ।
पोवारी से आमरो संस्कार ॥

पोवार की बोली से पोवारी ।
पंवार की पहचान पोवारी ॥
पोवारी से आमरी मायबोली ।
पोवारी से आमरो संस्कार ॥

पुरखाइन को मान पोवारी ।
आमरी धरोहर से पोवारी ॥
पोवारी से आमरी मायबोली ।
पोवारी से आमरो संस्कार ॥

बोलबीन लिखबिन पोवारी ।
बढ़ावबिन पोवारी को नाव ॥
पोवारी से आमरी मायबोली ।
पोवारी से आमरो संस्कार ॥

मालवा लक् आयी पोवारी ।
गढ़कालिका को से आशीर्वाद ॥
पोवारी से आमरी मायबोली ।
पोवारी से आमरो संस्कार ॥

सबझन बोलो जय पोवारी ।
बढ़ती जाय आमरी पोवारी ॥
पोवारी से आमरी मायबोली ।
पोवारी से आमरो संस्कार ॥

****

ऋषि बिसेन

५६. आमरा पोवारी संस्कार

आमरी पोवारी से,
आमरा सुंदर संस्कार !
करो येको जतन,
नोको करो तिरस्कार !!

करबिन आमी सब,
पुरखा गिन को मान !
बढावबीन क्षत्रिय वंश,
को सदा सम्मान !!

विदेशी संस्कार आमी,
कसो करबिन मान्य !
पोवारी संस्कार करहे,
इनला पुरो अमान्य !!

गुरु वशिष्ट की,
आमी संकल्पना आजन !
पाप को करिन अंत,
प्रमार क्षत्रिय राजन !!

पोवार पंवार का सेती,
साजरा पोवारी संस्कार !
पोवारी संस्कार करहे,
सबको सपन् ला साकार !!

बनबिन काही भी बाबू ,
साहाब अन् काश्तकार !
कभी नहीं भूलबिन,
आमरा पोवारी संस्कार !!

ऋषि बिसेन

पोवारी संस्कृति

गर्व लक् कसेजन,
आमी पोवार आजन !
पुरखा होतिन आमरा,
मानवता का राजन !!

पोवारी से पोवार,
पंवार की संस्कारधानी !
बड़ो महान से आमरो,
क्षत्रिय वंश की कहानी !!
****

ऋषि बिसेन

५७. पोवारी को संस्कार

पोवारी को संस्कार से,
साजरा पिरम् को संस्कार !
पोवारी को संस्कार से,
हिन्दू धरम् को संस्कार !!
पोवारी को संस्कार से,
सबकी एकता को संस्कार !
पोवारी को संस्कार से,
त्याग दान को संस्कार !!

पोवारी संस्कार सिखावसे,
सबला प्रकृति का पिरम् !
पोवारी संस्कार देसे,
आपरो पुरखा गिन ला मान !!
पोवारी संस्कार देसे,
आपरी बहु बेटी ला सम्मान !
पोवारी संस्कार शिखावसे,
क्षत्रिय होन् को धरम् !!

पोवारी संस्कार से छत्तीश कुर्,
को क्षत्रिय पोवार पंवार मा !
पोवारी संस्कार दिससे,
हामरी मायबोली पोवारी मा !!
पोवारी संस्कार दिससे,
आपरो सब सन् तिव्हार मा !
पोवारी संस्कार दिससे,
समाज को नेंग दस्तूर मा !!

बचावनो से हमला आपरो,
पोवारी को संस्कार ला !
देवनो से मान सम्मान,

ऋषि बिसेन

पोवारी संस्कृति

हामरो पोवारी संस्कार ला !!
शिखावनो से नवी पीढ़ीला,
योव साजरा पोवारी संस्कार !
सांगनो से सबला,
सनातनी आय आमरो पोवारी संस्कार !!
****

ऋषि बिसेन

५८. पोवारी संस्कार

प्रमारवंशीय सेजन् आमी क्षत्रिय पंवार ।
छत्तीश कुर् का सेजन् आमी पंवार पोवार ॥

पोवारी नेंग दस्तूर सेती आमरो संस्कार ।
आमी कर् सेजन हिन्दू धरम ला साकार ॥

समाज की बोली से मीठीप्यारी पोवारी ।
बोलनला बसो तब् लगसे केतरी न्यारी ॥

पोवारी बोली अन् पहचान से पोवारी ।
पकवान सेती आटेल बुलया न् घीवारी ॥

कोचई अन् बरमराकस पाना की बडी ।
साजरो लगसे राखड़ी अना डुबुक बड़ी ॥

पोवारी मा बेटी बेटा सबदून सेती समान् ।
करसेजन् सब बुजरुग गिनको सदामान् ॥

साजरी न्यारी से आमरी पोवारी पहचान् ।
राखबिन सदा पोवारी संस्कार को मान् ॥

****

ऋषि बिसेन

५९. मी क्षत्रिय पोवार

मी क्षत्रिय पोवार! पोवारी से मोरी पहचान्,
बोलुसु मी पोवारी अन् सेती पोवारी संस्कार ।

पुरखाइन मोरो दुसरो नाव ठेईं सेत् पंवार,
मोरो धरम क्षत्रिय निभाऊसु वोको संस्कार ।

नहाय अभिमान पर्र करुसु येको सम्मान् ,
मी पोवार आव अन् मोरी से पोवारी पहचान् ।

पोथी मा कसेत् मालवा से अतीत को निवास,
नगरधन लक् आया छत्तीश क्षत्रिय कुल महान् ।

वैनगंगा को आँचल मां बनया आमी किसान् ,
क्षत्रियता को मान राखकर ठेया पोवारी पहचान् ।

गढ़कालिका को आशीष लक् आई यव् शान् बॉन्,
मी पोवार अन् पोवारी मोरी असल पहचान् ।

****

ऋषि बिसेन

६०. आमरी माय वैनगंगा

मुंडारा सिवनी लक् जन्मी से
पावन नदी वैनगंगा !
सिवनी लक् बालाघाट को क्षेत्र
मा जासे वैनगंगा !!

गोंदिया अन् भंडारा की भूमि
ला करसे या पावन !
प्राणहिता नाव लक् समावसे
गोदावरी मा वैनगंगा !!

सतपुड़ा न् विदर्भ की गंगा
असि से मोरी वैनगंगा !
आपला पंवार पोवार की
पहचान् से मोरी वैनगंगा !!

आपलो पुरखा गिनना जंगमा
मराठा को देईन् साथ !
वीरता को मान मा मिल्यो
वैनगंगा क्षेत्र उनको हाथ !!

खेती किसानी मा दक्ष होतीन
आमरा पुरखा पंवार !
वैनगंगा को आँचल मा
फल्या फूल्या आमी पंवार !!

सिवनी लक् बालाघाट,
गोंदिया लक् भंडारा जिला !
क्षत्रिय संस्कार को रंगमा
रंगीसे योव पोवारी किला !!

ऋषि बिसेन

सिंचित करसे उनला
आपली पावन माय वैनगंगा !
पोवार बसीसेत वहां
जहां लक् बोहावसे माय वैनगंगा !!
****

ऋषि बिसेन

६१. क्षत्रिय धरम्

क्षत्रिय को अर्थ होसे, धरम् को रक्षक ।
क्षत्रिय को करम्, अन्याय को भक्षक ॥

क्षत्रिय नहाय सिरफ, येक् मुफ्त उपाधी ।
यासे येक् पद जेकी से, करम की मर्यादा ॥

क्षत्रियता को कर्तव्य से, देश की रक्षा ।
समाज को रक्षण, निसर्ग को संरक्षण ॥

क्षत्रिय ला रहनो पड़ से, सदा नियमित ।
वोको लक् उम्मीद से, रहे वू संयमित ॥

क्षत्रिय ला बचावनो से, सब बहु बेटी की लाज ।
वोला करावनो से, सब रोग राही को इलाज ॥

क्षत्रिय को करम्, सम्भालनो से राजपाठ ।
वोला छोड़नोच पड़े, तामसिक ठाठ बाट ॥

क्षत्रिय ला माननो से आपरो गुरु को आदेश ।
वोला जन् हित मा माननो से जनादेश ॥

****

ऋषि बिसेन

६२. पोवारी बोली

पोवार पंवार की बोली से पोवारी,
अलंकार जड़ित आमरी पोवारी ।
पोवारी संस्कार लक् सजी भाषा,
समाज की आय यव् अभिलाषा ।१।

वैनगंगा को आँचल का पंवार,
बोलोसेत सबदुन मीठी पोवारी ।
मालवा की माटी लक् जुडी पोवारी,
परमार वंश की शान् से पोवारी ।२।

गर्व से आमी आजन् क्षत्रिय पोवार,
पोवारी बोली से हामरो पोवारी संस्कार।
बोलबीन लिखबीन सुनबीन पोवारी,
पोवार साहित्यकार की भाषा से पोवारी ।३।

छत्तीश कुर् को पंवार को मान् से पोवारी,
पुरखा गिन को सम्मान् से पोवारी।
बुलंद रहे आमरी पुरातन् बोली पोवारी,
अजर अमर रहे आमरी बोली पोवारी ।४।

****

ऋषि बिसेन

६३. बोलो पोवारी जगाओ पोवारी

आधुनिक होनला सोड़ रह्या सेती आमी पोवारी ।
पंवार पोवार भूल रह्या सेती, संस्कार पोवारी ॥

वैभवशाली इतिहास की साक्षी से हामरी पोवारी ।
काय लाइ सबदुन बिसर रही से हामरी पोवारी ॥

काई लाई आवसे लाज बोलन ला पोवारी मा ।
काई लाई हाससेती लोख, बोलता देख पोवारी मा ॥

याद दिलावनो से सबला, वैभव पोवारी को ।
बतावनो से गौरवशाली इतिहास, पोवारी को ॥

आमी आजन, छत्तीश कुर् का क्षत्रिय पोवार पंवार ।
आबूगढ की यज्ञवेदी लक् परगट भया आमी पंवार ॥

मालवा राजपुताना लक् धरकन् आया सेजन् पोवारी ।
ऐतिहासिक अन् संस्कृति लक् परिपूर्ण पोवारी ॥

गर्व लक् बोलो पोवारी अन् लिखो सदा पोवारी ।
हासी की बोली नहाय, आमरो संस्कार से पोवारी ॥

छत्तीश कुर् को क्षत्रिय पंवार पोवार की बोली से पोवारी ।
आमरो मान, सम्मान, पहचान अन् संस्कार से पोवारी ॥

****

ऋषि बिसेन

६४. मोरा पुरखा

घर् का ओढिल अन् पुरखा,
तुमरोच से योव घर् परिवार ॥
तुमला करसेजन हमी नमन्,
देखो योव से तुमरो घर् द्वार ॥१॥

ठेव किरपा अन् राखो आशीर्वाद,
देव नवी पीढ़ी ला ज्ञान को दान ॥
देव इनला संस्कार को वरदान ।
बन जाये अमर मोरो खानदान ॥२॥

श्राद्ध की पूजा सनातनी संस्कार ।
मोरो तर्पण मा से तुमरी शिक्षा ॥
मोरी पहचान से तुमरो दियो नाव ।
मिली से तुम लक् असी दीक्षा ॥३॥

काही चूक होये त् देव माफ़ी,
काही कमी रहे त् पुरो करो ॥
राखो हामरो ऊपर आपरो हाथ,
आशीर्वाद लक् मोरो घर् भरो ॥४॥

तुमरी शांति से हामरी समृध्दि,
स्वीकार करो योव मोरो तर्पण ॥
तुमरो कर्ज चुकावता रहबीन,
तुमला मोरो श्रद्धासुमन अर्पण ॥५॥
****

ऋषि बिसेन

६५. माय, काकीजी अन् बड़ीमाय

घर मा सेती मोरी तीन माय ।
माय, काकीजी अन् बड़ीमाय ॥

रिश्ता मा होसेती जिठानी, देवरानी ।
पर् मोला पिरम मिल्यो मनमानी ॥

सब माय सुनावत होतिन कहानी ।
मोरी बेटी आती कहत होती नानी ॥

सायनी माय भी सुनावती कहानी ।
कहत होती घर् सेत तीन्ही रानी ॥

घर् होतिन दूयी भाई चार बहिन ।
मानत होतिन वोय माय को कहिन ॥

मिल बनावत होता वोय सब सयपाक ।
एक दुसरो को दर्द ला लेवत होतिन ढाक ॥

असो पिरम को घर् होसे समाज मा खाश ।
असो घर् मा देवता को रहसे सदा वास् ॥

****

ऋषि बिसेन

६६. माय बाप को राखो मान

माय बाप सबका सेती देवता तुल्य ।
जीवन मा उनको योगदान से अतुल्य ॥

जीवन को पहिलो दर्शन कराव सेती ।
माय बाप समाज को संस्कार देसेती ॥

माय की ममता अन् पिता को दुलार ।
दुहीका समन्वय देसे जीवनला संवार ॥

दुःखला वोय आपरो जवर राख असेती ।
अना सुखला टुरु पोटू ला बाट देसेती ॥

भेटे पिता को श्रम अन् माय की ममता ।
सब बेटा बेटीमा राखअसेती वोय समता ॥

मायबाप आपरो सब कुछ तुमला देहेती ।
बदलो मा तुम लक् काहीच नहीं लेहेती ॥

दिवस लक् रात्रि वरि धंधा कर् सेती ।
दर्दमा भी तुमला वोय काही नही कहेती ॥

मायबाप तुमरो जीवनला देसेती संवार ।
तुमला भी बननो पढ़े आता श्रवणकुमार ॥

****

ऋषि बिसेन

६७. अजी को अजी : दादाजी

अजी को अजी ला कसेती सब् दादाजी ।
आमी सब् कसेजन उनला भी अजी ।।

परिवार को मुखिया होसेती दादाजी ।
संस्कारी ध्वज देसेती सदा दादाजी ।।

परिवार का सम्मान सेती दादाजी ।
सबला वंश नाव देसेती दादाजी ।।

कथा लक् संस्कार लेसिती टूरुपोटु ।
ह्रिदयमा वोय राखसेत उनका फोटू ।।

माय अजी को पूज्य आती दादाजी ।
दादीजी को भी प्रिय आती दादाजी ।।

परासेती चोर जब् होसे उनकी आहट ।
जब् होसे उनकी खेत बाड़ी मा राहट ।।

समस्या को समाधान मा देसेती ज्ञान ।
बतावसेत सबला प्रकृति को विज्ञान ।।

सांग सेती ढोरबासरु को सही रहवास ।
होय जासे उनला बारिश को आभाष ।।

दादाजी जवर से पांच पीढ़ी को ज्ञान ।
नवी पीढ़ी लक् दूर होसे दैत्य अज्ञान ।।

अज् रिश्तों का मान होय रही से कम ।
त् नाती नतरु का होय जासे डोरा नम ।।

चरित्र निर्माण का आधारसेती संस्कार ।
दादा दादी को पिरम देसे यव् सुसंस्कार ।।

अजी को अजी ला कसेती सब् दादाजी ।
खेल खेल मा शिख देसेत हमला दादाजी ।।

****

ऋषि बिसेन

६८. मोरी माय

मोरी पियारी माय, पोवारी संस्कार की धनी आय,
सासु सुसरो ला मान देवन वाली, संस्कारी मोरी माय ।

नेंग दस्तूर ला याद राख, पुरो निभावसे मोरी माय,
घर को बुजरुग कसेत, संस्कारी साजरी बहु आय ।

फूपा बाई गिनला देसे, पुरो मान सम्मान मोरी माय,
पहराओ से बाली अना धाडसे लाखतोखाड़ मोरी माय ।

श्यादी बिहाव मा सांगसे, जुनो नेंग मोरी माय,
सन् तिवहार मा करसे, पुरो नेंग दस्तूर मोरी माय ।

रिश्तेदार गिनला देसे, पुरो मान मोरी माय,
सबदुन चहेती से अन् पावसे मान मोरी माय ।

किसम किसम को पकवान, बनावसे मोरी माय,
मिजवान गिन लाइ, बनाव से मिजवानी मोरी माय ।

मोरो टुरु पोटु गिनकी, चहेती आजी से मोरी माय,
धावत धावत आवसेती अन् कसेती उनला आजी माय ।

****

ऋषि बिसेन

६९. आजी माय

मोरो अजी की माय ।
मोरी प्यारी आजी माय ॥
सबला पुचारत होती ।
प्यारी मोरी आजी माय ॥१॥

नाहानागन की ओसरी मा ।
होती आजी माय की खाट ॥
नाती पोता कब् आहेति ।
देखत होती सबकी बाट ॥२॥

राती रोज सुनावत होती ।
हम सबला यव् कहानी ॥
पुरखा होतिन आमरो ।
येक् देश को राजा रानी ॥३॥

सांगत होती माय मोला ।
निभावनो से आपलो धरम ॥
मेहनत करो बेटा मोरो ।
करनो पढ़े असो करम ॥४॥

चूल्हों मा इष्तो पेटायकर ।
जोड़त होती रोज दुही हात् ॥
बिंद्राबन मा जल चढ़ायकर ।
मांगतहोती तुलसी को साथ ॥५॥

अन्न जेवाय कर् देवा ला ।
लेवत होती तब् माय जेवन ॥
सिग पर को पहिलो भाग ।
गऊ ला जावत होती देवन ॥६॥

ऋषि बिसेन

उपदेश होतो रोजको उनको ।
बनो साजरा मोठा ज्ञानी ॥
पढो लिखो तुम्ही टूरू पोटु ।
नोको रहो कोई अज्ञानी ॥७॥

आता नहाय जवर मोरी ।
प्यारी मोरी आजी माय ॥
ऊपर लक् देसे आशीष ।
सबला मोरी आजी माय ॥८॥

****

७०. मोरी फूपाबाई

मोरो कुर की लक्ष्मी से मोरी फूपाबाई ।
सबला पिरम देन् वारी से मोरी फ़ूपाबाई ॥

दुही खानदान ला देसे वा आपरी ममता ।
फ़ूफाबाई सबमा राखसे पिरम मा समता ॥

आननला जावुसू मी उनला कई बार ।
आयकन इत् बाटसे पिरम को अंबार ॥

पोवारी का नेंग दस्तूर करसे फ़ूपाबाई ।
मोरो छटी अन् करिसेस काकन बंधाई ॥

अजी उनको आवन की देख् सेती बाट ।
आवन को बाद भाई बहिन की रहसे ठाठ ॥

आइकन हमरो घर ला साजरो सजाय देसे ।
पोवारी का साजरा नेंग दस्तूर भी सांगसे ॥

फ़ूफाबाई राखसे भज्जा भज्जी को ध्यान ।
भज्जा भज्जी भी देसेती उनला पुरो सम्मान ॥

ससुराल मा सांगसे आपरो माहेर की शान ।
हमरो भला करन लाई दे देहे वा आपरी जान ॥

****

ऋषि बिसेन

७१. भाई बहिन को पिरम

भाई बहिन से विश्वास, धरम अन् पिरम को से रिश्ता,
भाई बहिन को रिश्ता से, खून अन् संस्कार का रिश्ता ।

माय अजी को संस्कार मा एकच आती भाई बहिन,
एकच घर मा जनम्या पर काय लाइ संग नहीं रहीन ।

संसार की या रीत से भाई ला मिलसे माय अजी को घर,
बहिन ला जावनो पढ़से ससुराल, आपरो पति को घर ।

समाज को योव नेंग दस्तूर, कर् देसेत भाई बहिन ला दूर,
घर् की च रहसे दूरी, पिरम ला नहीं कर् सिक् योव दस्तूर ।

राखी को सन् अन् दस्तूर, भाई बहिन ला आनसे करीब,
भाई बहिन को रिश्ता सदा रहसे, चाहे मोठा रहो की गरीब।

बहिन उपासी रहसे दिवस भर, बढ़ावन लाई भाई की उमर ,
भाई देसे बचन की बहिन की रक्षा करहे वू पुरो जीवन भर्।

भाई की खुशहाली, तरक्की की राखसे बहिन अभिलाषा,
येक् साड़ी, लाखतोखाड़ को खाजो अन् कोशारा की आशा ।

****

७२. बहु बेटी अना बेटा जवाई

माय बाप को डोरा का सितारा,
होसेती उनका बेटा अन् बेटी ।
उनको बिहाव को बाद,
जवाई बनसे बेटा अन् बहू होसे बेटी ॥

रिश्ता नाता को रहवसे महत्व,
मानुष को जीवन मा हर जाग्हा ।
सबला जोड़कन राखसे,
परिवार का संस्कार अन् पिरम को धागा ॥

देवनो से जरुरी बहु ला बेटी को
मान अन् सासु ला माय को सम्मान ।
तसच जवाई ला बेटा को मान अन्
सुसरो ला पिता को सम्मान ॥

माय बाप ला बेटी अना बहू ला
समान पिरम अन् मान देवनो पढे ।
बहु ला भी माय बाप अन्
सासु सुसरो ला समान मान देवनो पढ़े ॥

माय बाप ला बेटा अना जवाई ला समान
पिरम अन् मान देवनो पढे ।
जवाई ला भी माय बाप अन्
सासु सुसरो ला समान मान देवनो पढ़े ॥

****

७३. खाशर की बारात

खाशर की बारात होती पोवारी की मोठी श्यान ।
नवरदेव की गुडुर की खाशर को होतो मोठो मान ॥

धुरधराई को दस्तूर मा धरत होतिन खाशर को धुर ।
कासरो धर रोकनों पड़त होतो सजया बईल को खुर ॥

नवरदेव को गुडुर का धुरकोरी बनत होता जवाई ।
बईल नहीं सम्भला त सारो सारी करत होतिन हसाई ॥

मोठो गाव अना कुनबा मा जावत होती खूब खासर ।
बारात मा खासर संग लेजावत होता रेणु न छाटी ॥

रंग रंग की सजावट मा साजरा दिसत होता बइल ।
गुडुर मा जुपत होता सब लक मोठा सुंदर बईल ॥

होल्या अना नाचनवारो रहव्त होता आगे सब लक् ।
वोको बाद गुडुर, दूसरी खासर अना रेणु लाइन लक् ॥

दूर लका खासर की बारात बड़ी साजरी चोवत होती ।
यन् बारात मा आमरी पोवारी का शान दिसत होती ॥

****

ऋषि बिसेन

७४. पोवारी रिश्तेदारी

सुसंस्कारी पोवार समाज,
देसे मान रिश्तों-नातो ला ।
जनम देने वाली आय माय,
बाप ला कसेती अजी ॥

अजी की बहिन फुपाबाई,
फूफाबाई कन को फुफयाजी
अजी को अजी दादाजी,
अजी की माय सायनी माय(दादीजी)
अजी को मोठो भाई बडोजी,
अजी की भोवजी होसे बड़ीमाय
अजी को नाहनो भाई काकाजी,
काकाजी की लक्ष्मी काकीजी
मोठो भाई बडभाऊ,
बडोभाऊ कन की भउजी,
उनको टुरा/टुरी भतीजा/भतीजी ॥१॥

बहिन ला कसेती बाई अना दीदी,
दीदी कन को जीजाजी
माय को अजी नानाजी,
माय की माय होसे नानी
माय को भाई बेटा होसे
भज्जो अना मोरो मामभाई,
माय की भाई बेटी उनकी
भज्जी मोरी मामबहिन
माय की बहिन मावसी बाई,
मावसी बाइ कन का मौसया जी,
उनको टुरा/टुरी मोरो मावसो भाई/बहिन ॥२॥

माय को भाई मामाजी,
मामाजी कन की मामाजी

पोवारी संस्कृति

घरवाली को नाहनो भाई सारो अना
वोकी बायको सारस(सरजन) बहिन
घरवाली को मोठो भाई देढ़सारो अना
वोकी बायको सारस(सरजन) बहिन
घरवाली की नाहनी बहिन सारी अना
वोको नौरा साढू(सागिल) भाई
घरवाली की मोठी बहिन अगड़सास अना
वोको नौरा साडू भाइ
मोरो बडोजी, माय को जेठ,
मोरी बड़ीमाय माय की जेठानी ॥३॥

मोरो काकाजी माय को देवर,
मोरी काकीजी माय की देवरानी
मोरो बडोजी को टुरा/टुरी
मोरो महालपे भाई/बहिन,
माय को पुतनया/पुतनीन,
मोरो काकाजी को टुरा/टुरी
मोरो काके भाई/बहिन,
माय को देवर बेटा/बेटी,
अजी को भतीजा/भतीजी
मोरो बहिन को टुरा/टुरी मोरो भास्या/भाची,
माय अजी को नाती/नतनिन
फूपा को टुरा/टुरी
मोरी फूपभाई/फूपबहिन ॥४॥
****

ऋषि बिसेन

७५. बारा डेरी को मांडो

मांडोधरी आनन् ला जावनो से जी भाऊ ।
मांडोधरी आनन् ला जावनो से जी भाऊ ॥

पुरो गाव मा देयी सेजन जी बुलावा भाऊ ।
झांभूर डगाल अन् डेरी लावनो पड़े भाऊ ॥

मांडोधरी को गाड़ो धर आय गयी से जवाई राजा ।
माय आरती धरकन आय गयी, होलिया बजाओ बाजा ॥

बारा डेरी को मांडो गड़ रही से हिवरो हिवरो ।
मांडो मा तोरन लग रहिसे लाल नीलो पिवरो ॥

बुधराम भाऊ न खंदी से डेरी गाड़न लाइ गड्ढ़ा ।
सबमा डेरी लगाव सोड लगुन डेरीको येक गढ्डा ॥

जांभुर की डारी चघाय तय्यार बारा डेरी को मांडो ।
आता जेवन लाई बसो, सुंदर बनायीं सेव मांडो ॥
****

ऋषि बिसेन

७६.परहा की पात

चल भाऊ बाई जावबिन खार खंदन ला खेत् ,
अज लक् हमरो परहा भया शुरु जावबिन खेत् ।

चल धर आता नांगर न् बख्खर भाऊ रामलाल,
बईल को संग मा धर ले पट्ठा न् दतार भाऊलाल ।

येक कन लक् खंदबिन मोठी बाँधी की खार,
आय रही से नहर को पानी अन् मोठी से धार ।

नांगदेव की बांधी मा चिखल मचाय रही सेती,
दुसरो कन् लक् बनिहार पेंडी फेक रही सेती ।

चांदा की बनिहार धर रही सेत् परहा की पात,
अजी बोल रही सेत् जल्दी लक बढ़ाओ हाथ ।

बारिश आवन लगी लगी से आन छतोड़ि खुमरी,
जल्दी निपटाय बांधी खाबिन गाकड़ अना घुंगरी ।

श्याम भय गयी आता जावनो से सबला आपरो घर्,
टुरु पोटू रश्ता देखत रहेत सबला जावनो से घर् ।

काकाजी येक खण्डी को सरयो जी परहा अज को दिन,
सूरज की लाली मा सीधी पात लगसे असो लेबिन गिन ।

****

ऋषि बिसेन

७७. किसानी अना गाहनी

तुम्ही किसान धरती को टुरा ।
सदा कर् सेव तुम्ही काम ॥
अन्नदाता आव तुम्ही आमरो ।
नहाय तुमला कभीच आराम ॥१॥

बइलजोड़ी सेती तुमरो सखा ।
दुःख सुख का सेती भागीदार ॥
धंधा कर् सेव तुम्ही संगमा ।
तब् आवसे घर् भात न् दार ॥२॥

शकारीच जासेव तुम्ही खेत् ।
राख सेव हाथमा येक शिदोरी ॥
संग मा जासे बईल की जोड़ी ।
धर् सेव संग इरा अन् दोरी ॥३॥

गाहनी भय गयी से शुरू हमरी ।
दूयी मोड़ा को पयिर से अज् ॥
दावनमा जूपी सेती सब बईल ।
भास्या आयासेत् इत् सजधज ॥४॥

दावन छूटी आता रास उड़ाओ ।
सफा अनाज को से सुन्दर रंग ॥
बोरामा भर गयी से आता रास ।
घर जावनो से हमला संग संग ॥५॥

****

ऋषि बिसेन

७८. गाव को मज़्या

गाव की शान से किसानी ।
गाव की पहचान किसानी ॥

अन्नदाता को निवास गाव ।
ईश्वर को वास् हमरो गाव ॥

गाव मा सेती रीति रिवाज ।
गाव सेती देश की आवाज ॥

पोवारी दिससे हमरो गावमा ।
संस्कृति भी बची से गावमा ॥

गावच आती आपलो स्वरग ।
गावच मा से साजरों निसर्ग ॥

गाव मा से तरा बोडी न् नहर ।
घर् घर् मासे पिरम की लहर ॥

गावमा मातामाय अना देवघर ।
इत् संस्कार दिससे घर् घर् ॥

अमराई हुड़की गाव की शान ।
खेती बाड़ी आय हामरी पहचान ॥

धुरा की तोर बांधी को चना ।
खुश होसे मन देख गंहू धना ॥

धरती का से स्वर्ग हामरो गाव ।
नवी पीढ़ी ला गाव लेय जाव ॥

****

ऋषि बिसेन

७९. उरकुडा

घोटी आम्बा को जवर से हमरो उरकुडा ।
कसेत येला गोबर फेकन को भी घुड़ा ॥

खालो खोदरा खंद कन् बनाव सेती उरकुडा ।
बरस भर मा दबसे अन् बनसे साजरो खात् ॥

आखा तीज को सन् लक् बंधसे खात्की पेटी ।
अजी की मदद कर सेती उनको बेटा बेटी ॥

कवरी धुप को बेरामा चलसे खात् फेकन को काम ।
दुफारी मा किसान अन् मित्र बईल करसेती आराम ॥

प्रकृति को उपहार से योव उरकुडा को खात् ।
किसान की उपज बढ़ावसे अन् करसे आबाद ॥

****

८०. किसान की सकार

उठो जागो सबझन भई गयी पहाट ।
भगाओ आलसीपन अन् सोड़ो खाट ॥

लगत् से काम खेत् देखरही से बाट ।
काममा चलो बूगी सोड़ो राजशी ठाठ ॥

गाई बईल सेरी गिन ला बाहर हेड़ देव ।
धरो खराटा भाऊ अन् बोहार दे कोठा ॥

उरकुडा मा डाक दे संतु गोबर को पुंजा ।
झाड़ बोहर दे अन् सफा कर हर ऊजा ॥

बाई गिन सड़ा सरावन कर रही सेती ।
नहायधोय कर डहेल मा चवक पुरेती ॥

चाहा संग जरसो खाय लेव् सब झन मुर्रा ।
सिदोरी मा से गाकड़ संग भेदरा की चटनी ॥

नांगर बख्खर धर जाय रही सेजन् खेत् ।
छोट्या पानी कांजी देय दे जनावर ला ॥

गायकी भसकी आहे त् दूध दुह देहेती।
सोड देजोस जनावर गोहन मा जाहेती ॥

सकार की चाहा भई आता जाओसेजन् ।
नवतो बइल ला पठ्ठा मा सिखाव सेजन्॥

बासरु पाठरु गिन बांध दे अना दे गवत् ।
नहीं त् सप्पा पराहेती गोहन मा सरपट॥

****

ऋषि बिसेन

८१. गवत् को गट्ठा

सकार को नास्ता चाय भयो आता ।
येव से मोरो खेत् जान को बेरा ॥
गवत् आननो से खेत लक् मोला ।
आन त् छोटी देय दे मोला ईरा ॥१॥

बांधी को धुरा अन् पडाव मा से ।
हिवरो हिवरो साजरो कोवरो गवत् ॥
गायी,बईल,भसी अन् शेरी लाई ।
काटनो से मोला एक गठ्ठा गवत् ॥२॥

हिवरो कोवरो कोवरो गवत् से ।
जनावर को चाव को आहार ॥
येव नही मिलअ चारा उनला जरा ।
जो घर रव्हसेत जनावर बिचारा ॥३॥

सांप किटूर को डर लक् भला ।
संग मा ठेउसू एक मोठो लट्ठा ॥
दस पेंडी काट भय गई आता ।
गवत् की दोरी बनाय बाँधुसु गठ्ठा ॥४॥

भयो काम सब आता जानो से मंग ।
धर के डोस्का पर् गवत् को गट्ठा ॥
लिखन भाऊ जाबिन आता संग ।
धर बइल नांगर अन् संग पट्ठा ॥५॥

मोला गवत् धर आवता देख रंगत् ।
बन्ध्या जनावर दावा झीक रहया सेती ॥
खुल्ला बासरु परात-परात गवत् ।
खानला मोरो कन् आय रही सेती ॥६॥

ऋषि बिसेन

हिवरो कोवरो कोवरो गवत् होसे ।
ढोर-बासरु को सकस आहार ॥
खाय के असो गवत् ला जनावर ।
चोव सेती साजरा बलिष्ट चमकदार ॥७॥
****

८२. आमरी अमराई

चलगा भाऊ नरेश आता अमराई जावबिन ।
धर सकोटि आता कच्चो आम्बा आनबिन ॥
नहान् नहान् सेती इत् साजरो खट्टो आम्बा ।
जरासो तोड़बीन बाकी पिकनलाई राखबिन ॥१॥

बनावबिन चटनी अना मिट्ठो तीखो गोढ़ साग ।
पनाह बनावबिन अन् मिटावबिन धुप ताप ॥
आमरो अजी को हाथ का सेती सब झाड़ ।
पिकोसेत् आम्बा तबा सबला देसेजन धाड़ ॥२॥

लगत् आम्बा फरी सेती जी भाऊ येन् साल ।
पीकसेत त् चोवसेत हिवरो पिवरो लाल ॥
गर्मी को दिवस की देखोसेजन आमी बाट ।
आम्बाचोर परासेत लेयकन् अजी की आहट ॥३॥

केतरी साजरी अन् मनमोहक से यवअमराई ।
देसे सबला मीठो आम्बा अन् ठंडी सावली ॥
खेलन् कूदन् की से इत् कन् बातच नीराली ।
खेलता खावता लगोसे सबला प्यारी अमराई ॥४॥
****

ऋषि बिसेन

८३. बारिश आयी

बारिश आयी बारिश आयी,
जीवन मा नवो उमंग लाइ ।
नहान नहान बून्द बड़ी भाई,
बारिश आयी बारिश आयी ॥१॥

कारा कारा बादर छाय गया,
इंद्रदेव को धनुष आय गया ।
चमचमाती बिजरी को संग,
बारिश को दर्रा आय गया ॥२॥

ठंडी हवा बोहान लगी आता,
माटी की सुगंध आवन लगी ।
मोहक यव् मौसम आयी से,
छोटी पानी मा खेलन लगी ॥३॥

टप टप कर बरश रही से पानी,
टुरु पोटु कर रहीसेत मनमानी ।
प्रकृति मा साजरी बहार आयी,
आजी ला याद आयी बात जूनी ॥४॥

बारिश आयी बारिश आयी,
किसान ला नव आनंद लायी ।
प्रकृति मा हरियाली आयी,
जीवन मा नवो बहार लाई ॥५॥

****

ऋषि बिसेन

८४. सावन महीना

आयी से सुहानो महीना सावन को ।
लाइ से खुशहाली महीना सावन को ॥

धरम करम को महीना से यव् सावन ।
बारिश संग बड़ो मनभावन से सावन ॥

होय जासे हिवरा हिवरा पुरो निसर्ग ।
प्रकृति अन् हरियाली का होसे संसर्ग ॥

जीवनदायी किसानी ला मिलसे जीवन ।
परहा पानी को संग खेत् बनसे स्वर्ग ॥

सात रंग को इंद्रधनुष दिससे साजरा ।
बादर चोवसेति जसो डोरा मा कजरा ॥

नदी, नाला, बोड़ी अन् तरा भर जासे ।
सबला पानी मा खेलनमा मज्या आसे ॥

सावन मा होसे अखंड रामायण को पाठ ।
पोवारी संस्कार की सावनमा चोवसे ठाठ ॥

राखी मा सब बहिन देखसेटी भाई की बाट ।
किसानी मा सेती अव्वल पंवार कसेत भाट ॥

****

ऋषि बिसेन

८५. तितली रानी

प्यारी न्यारी तितली रानी से बड़ी सयानी !
मोरी सयानी माय सान्गसे येकी कहानी !!

भई सकार बेरा से जावन को आता बाग !
छोड़ो खाट सब आता चल जाओ जाग !!

चल गा छोटी नहानसी पप्पी अना गुड्या !
हाकल त् कित् कन् से आमरो मोठो बड्या !!

केतरी साजरी न्यारी से प्यारी तितली रानी !
देसे ख़ुशी सदा या कसे मोरी माय सयानी !!

सबउजा फूल मा बसीसेत प्यारी तितली !
दिवस को उजाड़ो मा सोईसेत सब गीद्ली !!

आनबिन आमी माय लाइ पुजा का फूल !
होयजाय पुरो जब हमरो खेल झूला झुल !!

धरती माय की यव् बगिया खूब से सजी !
पढ़न को भयी बेरा हाकल रही सेत् अजी !!

जाय रही सेजन घर् प्यारी तितली रानी !
शकारी आयकन् अख्रिन खेलबीन मनमानी !!
****

ऋषि बिसेन

८६. गोहन

दिवस बुड़ता, गोहन आवन की बेरा ।
बासरु गिनको, इटकावन की बेरा ॥

महेनक्या न् कोठा मा, गवत डाकिस ।
माय न् मेरवन ला, खुटो जवर राखिस ॥

माय की आहट मा, बासरु रम्भाय रही सेत् ।
लेखरु दावा धर, ईत् उत् पराय रही सेत् ॥

चेपरी गाय को, ढूना की टुन टुन ।
केतरी मधुर से, यव् श्याम की धुन ॥

डूबतो सूरज को, लाल सुनहरो रंग ।
बइल भी आय गईन, गोहन को संग ॥

घरी आय गयो, आता पूरो गोहन ।
आन तो दावा, सबला बांध दे रोहन ॥

****

ऋषि बिसेन

८७. नंदी बईल

महादेव को नंदी से दुही बईल ।
श्रम का धनी सेती दुही बईल ॥
सुख सम्रद्धि को प्रतीक बईल ।
देवतुल्य धरतीपुत्र सेती बईल ॥१॥

किसान का संगी बईल जोड़ी ।
नोको कहो इनला सिर्फ बोड़ी ॥
घर को सेती शान बईल जोड़ी ।
किसानी का कर्मजीवी से जोड़ी ॥२॥

खाशर को खिचन वाला बईल ।
गाड़ो रेडू मा जुपन वाला बईल ॥
नांगर भरख्खर जोतनवाला बईल ।
किसानी को पुरो संगी से बईल ॥३॥

किसानी को नवरदेव से बईल ।
पोला मा सजसेती सब बईल ॥
बेंगड़ रंग लक् सजसेती बईल ।
तोरण टूटी न् धाव सेती बईल ॥४॥

रोज नहावसेति आमरा बईल ।
तेल हरदी लक् सजसेती बईल॥
ख़ासेति पाहूनचार हमरो बईल ।
परिश्रम लक् देव बनसेती बईल ॥५॥

****

ऋषि बिसेन

८८. मोरो मित्र बईल

मी बईल मोरों काई नहाय कोई नाव,
जित कन फांदो उत् आमला जावनों से ।
जसो धंधा मिले वसो काम करनो से ।।

मी न् मोरो से अखिन येक जोड़ीदार,
मालिक न् मालकिन सेत् गरीब किसान ।
दिन रात करसेत आमी खेती को काम ।।

परहा सरयो आता से थोड़ो आराम,
अज् को रोज से थोड़ा अलगच् ।
सब झन् पेहरि सेत् नवा नवा कपड़ा ।।

आमरी होय रही से अज् साजरी सफाई,
कोनी काम नहीं देई सेत् आब वरि ।
हमला नवरदेव बनाय रही सेत् अज् ।।

बड़ा साजरा सजाय देईन आमला ,
गरीबी से पर् खवाय रही सेत् पकवान ।
देवता वानी आमरा लगी सेत् पाव ।।

अज् आखर मा सप्पा दोस्त भाई मिलया,
घर आया त् बढ़ो भयो सम्मान ।
एतरो प्यार मिलयो न् असो मान ।।

सप्पा थकान मिटी न् आयो नवो जोश,
मोरों साथी ला पूछ्यो काजक होतो अज् ।
वोन् कहिस एतरो भी नहीं से तोला भान ।।

अज् से मित्र बइल को सम्मान को दिवस,
येला कसेत सबको प्रिय पोला को तिहार् ।
किसान न् बईल की दोस्ती को सन् तिहार् ।।

****

ऋषि बिसेन

८९. जीवन को पहिया

मानव जीवन को दुई पहिया ।
येक् पुरुष से अना दुसरो से नारी ।।

पुरुष देसे आपरो घर ल् आकार ।
नारी देसे घर ल् मान संस्कार ।।

संस्कार लक् बनसे परिवार ।
परिवार लक् बनसे समाज ।।

समाज लक् बनसे पुरो राष्ट्र ।
राष्ट्रकी इकाई से यव् परिवार।।
****

९०. मितव्ययी बनो पंवार

जीवन मा पइसा को से महत्व,
खरचो तुम येला हिसाब लक् ।
नाश नोको कर् पोवार भाऊ,
चलो जीवन मा हिसाब लक् ॥

जीवन को नहाय काई भरुषा,
कब् का होये कोई नहीं जानत् ।
नवी पीढ़ी को राखनो से ध्यान,
नासिक लोख यव् नहीं मानत् ॥

पइसा बचावनो भी कमानवो से,
फिजूलखर्ची का करो जी त्याग ।
हिसाब लक् रांधो जी सयपाक,
नोको नाश करो जी भात् श्याग ॥

पाव वोतराच पसारनो चाहिसे,
जेतरी से तुमरो जवर लम्बी चादर ।
दस्तूर निभावन मा कम करो खर्चा,
नहीं त् फैलानो पढ़े भीखकी चादर ॥

मेहनत करो गा पोवार भाऊ बाई,
तुमला जावनो से सब लक् आगे ।
हिसाब लक् चलो यव् से बिनती,
हिसाब लक् खर्चो अन् रह्यो आगे ॥

****

ऋषि बिसेन

९१. घर को बटवारा

दुही बेटा को आता भय गयो बिहाव ।
घर् आयीन बहु अन् आनीन ख़ुशी ॥
अजी माय का भयीन सपन साकार ।
माय कहन लगी बहु सेती बेटी जसी ॥१॥

बेरा बितन को संग बढ़ गयी टकराव ।
नहान नहानसी बात बनत होती मोठी ॥
अजीमाय आता भय गया सासुसुसरो ।
असो लग्यो की टूटजाहे उनकी कोठी ॥२॥

मायबाप की कोशिश होती जोड़न की ।
बहु गिनको सुवारथ आता भयो हावी ॥
भाई भाई मा भी बढ़ गयी से आता दुरी ।
माय अजी की मोठी भय गयी मजबूरी ॥३॥

घरका हाल देख वय बिचारन लगिन ।
कसो करिसेजन इनको पालन पोषण ॥
कमी रह गयी रहे का हमरो पालन मा ।
काय लाई होवन लग्यो हमरो शोषण ॥४॥

रोज रोज की खटपट भय गयी भारी ।
बटवारा से का आता आखिर समाधान ॥
जागहा जनावर बरतन भांडा सब बटेत ।
मन को कसो बाटा यव् नहाय धन्य धान ॥५॥

भयो बटवारा आता बन गया दुही घर ।
दुही चूल्हों की आंच मा मिट्यो विवाद ॥
नहीं पटसे से बेस से भयो यव् बटवारा ।
संस्कार धरम का नोको करो बटवारा ॥६॥

****

ऋषि बिसेन

९२. जूनो घर की खोली

घर को बीच मा रहवसो ओसरी खोली ।
देवघर की चौरी की खोली ओसरी खोली ॥

सयपाक को चूल्हो की रांधन खोली ।
अन्न देव की मोठो मान की खोली ॥

घर मा पहिले होसे मोठागन की सपरी ।
बसन की कुर्ची टेबल की से या सपरी ॥

कनघर रहवसे समाइन ठेवन की खोली ।
येको दुसरो नाव से माचघर की खोली ॥

आंग धोवन की रहत् होती एक खोली ।
वोला कहत् होता अगधुंना की खोली ॥

मोठागन मा रहव सेती दुई सपरी ।
तसच नहानागन मा होसती दुई सपरी ॥

डहेल लक बाड़ी वरी होतो जूनो घर् ।
हर मौसम मा देत् होतो सुकून यव् घर् ॥
****

ऋषि बिसेन

९३. रांधन खोली

देवघर को बाद को घर को पवित्र भाग से रांधनखोली,
संस्कार को संग सयपाक बनावन की खोली रांधनखोली।

रांधनखोली से अन्न की देवी माय अनपूर्णा को वास्,
यव् पावन रहसे त् घर् मा होसे देवी देवता को निवास।

चप्पल जूता पेहरकन नही जावती रांधनखोली मा,
नहायधोय कन् सयपाक करत् होतिन पुरानो जमाना मा।

लकड़ी को चूल्हों को या गैस चूल्हों को सयपाक,
बिन्नी सीग पर को अन्न ला भगवान लाइ राख।

जमाना बदल्यो अना बदल रही सेती बिचारन को रंग,
रांधनखोली अज् भी किचन भयो अन् बदल गयो ढंग ।

नवो जमाना मा भी घर बनावन को वास्तुकला मा देसेती मान,
रांधनखोली को ला देसेती सब लक ज्यादा सम्मान।

****

ऋषि बिसेन

९४. गोली को खेल

चलो संगी साथी खेलनला जावबिन ।
भई पढाई आता खेलकन् आवबिन ॥
कंचा गोली को आता खेल खेलबिन ।
चलो संगी साथी खेलनला जावबिन ॥१॥

सबला खेलनला आता हाकलबिन ।
गोली खेलनला कई दल बनावबिन ॥
साजरोलक् सब निशाना लगावबिन ।
चलो संगी साथी खेलनला जावबिन ॥२॥

खेल खेल माच नवो मित्र बनावबिन ।
घेरा बनायकर आमी गोली खेलबिन ॥
जीतहार की काई घाइ नहीं करबिन ।
चलो संगी साथी खेलनला जावबिन ॥३॥

कोनी संगमा काई भेद नहीं करबिन।
रंग रंग की गोली संग सब खेलबिन ॥
छुट्टी मा आमी सब मौज मनावबिन ।
चलो संगी साथी खेलनला जावबिन ॥४॥

खेलन को बाद घर् सब मा आवबिन ।
घर को काम मा हमी हाथ बटावबिन ॥
लिखाई पढ़ाई का काम पुरो करबीन ।
चलो संगी साथी खेलन ला जावबिन ॥५॥

****

ऋषि बिसेन

९५. संगी साथी

याद् आवसेत मोला बालपन का संगी,
याद् आवसेत मोला नहानपन का साथी ।

माय अन् काकी को हाथ लक् खाना,
बसकन सबझन गावत होता मिठो गाना ।

नदी पहाड़, गिल्ली डंडा, छियाछायी को खेल,
बनत् होता इंजिन अन् दस डब्बा की रेल ।

सेल को रॉड अन् टीन को संग जोड़िन चक्का,
धुल्ला माटी मा खेलकन् लगावत होता धक्का ।

गोली कंचा, खो खो अना कबड्डी को जूनो खेल,
नवो सेती किरकेट, फुटबाल, वालीवाल को खेल ।

फाफा फिफली सपड़ावन को बालपन को खेल,
संगी साथी को खेल खेल मा बढ़त होता मेल ।

चल भाऊ बाई आता जाबीन भय गयी श्याम,
आय रही से गोहन सड़क पर् होय जाहे जाम ।

याद् आवसेत मोला बालपन का संगी,
याद् आवसेत मोला नहानपन का साथी ।
****

ऋषि बिसेन

९६. मोरी प्यारी साइकिल

मोरो अजी जवरसे येक नीली साइकिल ।
होसे जरासी ऊंची मोरो कद से नाहनो ॥
पहले पासून मी शिख्यो चलावनो कैंची ।
आता बसुसु सीट पर कोनही त् पहचानों ॥१॥

शिखन मा फुट गया मोरा दुही टोंगघरा ।
अखिन शिखनोसे कोनी दवाई आनों जरा ॥
गयो शिखन ला मी गांव को आखर जवर ।
पड्यो धड़ामलक अन् घुमन लगी पूरीधरा ॥२॥

मोरो अजी न् धरया साइकिल मा आपरा हाथ ।
सीट पर् बस गयो जब् मिल्यो उनको साथ ॥
आता मोला लग्यो बन गयो मी पुरो महाराज ।
अखिन पड्यो खाल्या अन् बज गयो बाजा ॥३॥

गिरता पड़ता आता सिख गयो साइकिल ।
रोज को अभ्यास मा नहीं देयो काई ढील ॥
पहुंच जासु जल्दी शाला साथी संग मिल ।
जासु जल्दी लक् जसो उड़से पंछी चील ॥४॥

घरको कामलक् आता बजार जायसिकुसु ।
माय अजी को काम मी जल्दी करसिकुसु ॥
आजा आजी की दवाई मी आता आन सिकुसु ।
साइकिल लक् आता सबऊजा जाय सिकुसु ॥५॥

मोरी संगी से साइकिल या सदा प्यारी ।
मोरी नीली साइकल सब लक् न्यारी ॥
शाला की भयी बेरा आता करुसु तयारी ।
चल मोरी साइकल चल आता मोरी दुलारी ॥६॥

****

ऋषि बिसेन

९७. याद् आवसे

याद् आवसे मोला मोरो बालपन का सब् जूनो खेल,
खेलत होता डीप, छिया छायी अन् नदी का पहाड़ ।
धावत धावत सब् खात होता धुरा पर् की राहड़ ॥

याद् आवसे मोला गिल्ली डंडा गोली कंचा को खेल ।
पिट्टूमा मा खपरी जमाय लेत् होता गेंद ला झेल ॥

याद् आवसे मोला बईल गाय बाशरू सब पशुधन ।
परावत होता सब संगी साथी आवता देख गोधन ॥

याद् आवसे मोला श्यादि बिहाव को नेंग दस्तूर ।
ढपली बाजा अन् पोवारी गाना लेयकन नाव कुर् ॥

साजरा केश काटत होता गाव को भाली मामा ।
संगमा खेलत होता कांता तेजू रज्जु अन् नेमा ॥

सबकी बालपन की बातच होसे बड़ी ही निराली ।
गाव मा सब ऊजा सदा होसे शांति अन् खुशहाली ॥

याद् आवसे मोला उन्हारा माह की लम्बी छुट्टी,
मामा फुपा गांव जाय खेलत होता खट्टी मिट्ठी ।
यादिला लिख नानू, अजी ला भेजत होता चिट्ठी ॥
****

ऋषि बिसेन

९८. सुविचारी बनो

बिचार करन् को रहे त् करो सुबिचार ।
बिचार नही आओ तरी राखो सुबिचार ॥

उठता, बसता, हिन्डता करो सुबिचार ।
अंधारो न् उजारो, सबमा राखो सुबिचार ॥

दुःख को बेरा भी, नोको करो कोनी कुबिचार ।
दुःख को बाद आहे सुख, राखो यव् सुबिचार ॥

अंतरमन मा ठेओ, सब साजरा सुबिचार ।
बाहिरमन मा भी आन देव सब् सुबिचार ॥

सबदुन अन् सबला बाटो सदा सुबिचार ।
जीवन को हर पल मा राखो यव् सुबिचार ॥

भगवान् लक् मांगो हर डाव् सुबिचार ।
भगवान् का बिचार होसेत् सुबिचार ॥

****

९९. समाज मा एकता जरुरी से

समाज को पूर्ण विकास लाई ।
समाज मा एकता जरुरी से ॥
समाज की खुशहाली लाई ।
समाज मा एकता जरुरी से ॥१॥

एकता मा होसे मोठो बल ।
एकता लक् समाज होसे प्रबल॥
समाज मा एकता जरुरी से ।
समाज मा एकता जरुरी से ॥२॥

एकीकृत समाज संगठित रहसे ।
संगठित समाज संयमित रहसे ॥
समाज मा एकता जरुरी से ।
समाज मा एकता जरुरी से ॥३॥

एकता की ताकत देसे सुरक्षा ।
यव् देसे सबला आत्मविश्वास ॥
समाज मा एकता जरुरी से ।
समाज मा एकता जरुरी से ॥४॥

एकता करसे समाज ला चेतन ।
चेतना लक् होसे नव सृजन ॥
समाज मा एकता जरुरी से ।
समाज मा एकता जरुरी से ॥५॥

एकता लक् संस्कृति को विकास ।
साजरो साहित्य को होसे सृजन ॥
समाज मा एकता जरुरी से ।
समाज मा एकता जरुरी से ॥६॥

****

१००. व्यसन सोडो

आमी पंवार, नहाजन कोनी व्यसनी ।
नोको बनो तुम्ही, कसच् दुर्व्यसनी ।।
दारू, धूम्रपान, गुटका, तम्बाकू सोडो ।
पोवार भाऊ, तुम्ही नोकोबनो व्यसनी ।।

नशा को प्रभाव लक् गिरसे सेहत ।
नाश करसे धन को या बुरो व्यसन ।।
परिवार को पतन कर देसे दुर्व्यसनी ।
समाज ला गर्त मा ले जासे दुर्व्यसन ।।

व्यसनी को काम धंधा हो जासे चौपट ।।
शरीरका अंग अंग होय जासेती ख़राब ।
टुरु पोटूको विकास होयजासे अवरुद्ध ।।
मती मारीजासे उनकी जो पीसेत शराब ।

आमी सेजन पंवार अना धरम को रक्षक ।।
आमी नहाजन व्यसनी अना कोनी भक्षक ।
विनती से सबलक सोडो व्यसन रहो दूर ।।
क्षत्रिय धरम ला निभावों बनो धरा रक्षक ।

****

ऋषि बिसेन

१०१. मन को डोरा

भौतिक जीवन का दर्शन करावसेती दुही चेहरा को डोरा ।
आध्यात्मिक जीवन का दर्शन कराव सेती मन को डोरा ।।

रंग रंग का होसेती हमरो चेहरा मोहरा को दुही डोरा ।
बेरंग रह्वसे परा दुनियाला रंगीन कसे यव् मन को डोरा ।।

शरीर ला सही मार्ग दिखावसे यव् दुही भौतिक डोरा ।
दिमाग ला सही मार्ग दिखावसे आपरो मन को डोरा ।।

प्रकृति अन् समाज को दर्शन करावसे दुही बाहरी डोरा ।
दर्शन को आभाश ला हिरदयमा धाड़से यव् मन का डोरा ।।

कलियुग मा ईश्वर की प्रतिकृति दिखावसे दुही डोरा ।
ईश्वर को आभास करावसेती अंतरमनमा बस्या डोरा ।।

दुही डोरा अन् अंतरमन डोरा को जरुरी से सही संयोजन ।
बाहरी अन् आंतरिक का संयोजन जीवन को सही नियोजन ।।

****

ऋषि बिसेन

१०२. जीवनयात्रा

अज् को दिवस सुन्दर से यव् ।
अज् की श्याम सुनहरी से येव् ।।

समय केतरो खुशहाल से अज् ।
पुरो यव् जीवन रंगीन से अज् ।।

सकारी का सदा रहे असोच रंगीन ?
का असीच रंगीन होय जाये गमगीन ?

बेरा असोच बुढ़त बुढ़त जासे ।
हासी अना ख़ुशी सोड़त जासे ।।

युवा भयो मनुष्याला बुढ़ापा आवसे ।
अन् वू ओन जूनी याद मा खोय जासे ।।

यादि, यादि से कोनी यथार्थ नहाय ।
आता कभीच कोनी को स्वार्थ नहाय ।।

अज् की यन् ख़ुशी ला सँजोनो से ।
येला सुनहरी याद मा पिरोनो से ।।

जीवनमार्ग को आखरी बखत वरी ।
बित्यो बेरा लक् अज् सकार वरी ।।

पुरो बेरा अन् पल ला संजोनो से ।
सुनहरी याद हिन् मा पिरोनो से ।।

****

ऋषि बिसेन

१०३. जीवन काजक आय

बच्चा को जनम लक् मौत पर् की यात्रा से जीवन ।
आपलो धरम अन् करम की यात्रा को नाव से जीवन ॥

माय बाप सेती आधार येनो जैविकीय जीवन को ।
परिवार समाज आधार सेती सामाजिक जीवन को ॥

बालपन, जवानी, बुढ़ापा, तीन अवस्था जीवन की ।
शिक्षा, संतान उत्पत्ति अन् ज्ञान सेती यव् अवस्था ॥

जीवन ला मानवीय जीवन बनावसे यव् मानवता ।
मानुष को करसे समाजीकरण अन् हटावसे पशुता ॥

संस्कारी जीवन से सुसंस्कृत जीवन को आधार ।
समाज सिखावसे अन् नहीं होवन देय निराधार ॥

सबला समझनो जरुरी से यव् जीवन का महत्व ।
साजरो संस्कारी जीवन को आधार रहवसे देवत्व ॥
****

ऋषि बिसेन

१०४. नवी शिक्षा

नवी पीढ़ी ला खूब पढ़नो पढे,
उनला आगे बढ़नो पढ़े ।
ज्ञान से आमरी विरासत,
अज्ञानता लक् लड़नो पढ़े ।

ज्ञान को मंदिर भोजशाला,
बनाइन महाराजा भोज ना ।
वाग्देवी को मंदिर बनाइन,
ज्ञान विज्ञान की खोज मा ।

मालवा को वीर पंवार,
किसान भयीन वैनगंगा क्षेत्र मा ।
उन्नत काश्तकारी लक्,
तरक्की भयी येनो नवो क्षेत्रमा ।

नवो जमाना से ज्ञान को,
महत्व से प्रबंधन विज्ञान को ।
व्यवसायी भी बन रही सेती,
धरकर ज्ञान व्यवसाय को ।

आधुनिक खेती अज् जरुरी से,
तकनीक नवी लेवनो पढ़े ।
धर किताब अभिगनक को संग,
आता नवो इतिहास गढ़े ।

ज्ञानी विक्रमादित्य अन् भोज,
को पूजक आती क्षत्रिय पंवार ।
नवो जमानों को संग चलबीन,
क्षत्रिय वैभवला देबीन संवार ।

****

ऋषि बिसेन

१०५. उठो सोडो आलस्य

हमरो धरम से यव्, करनो पढ़े आपरो करम ।
उठो मोरो बहिन भाई, करो शुरू आपरो करम ॥

राजपाठ को आता, गुजर गयो जूनो जमाना ।
मेहनत लक् तुमला, नवो राजपाठ से बसाना ॥

लगो आपरो लक्ष्य की प्राप्तिमा, सोड आलस्य ।
जुडो मन लक् आपरोकाम मा, तोड़ आलस्य ॥

जीवन मा काही बननो लाइ, देखो मोठो सपन् ।
सपन् ला पुरो करन् लाइ, सहनो पड़े यव् तपन् ॥

महान इतिहास देसे, मोठो लक्ष्य ठेवन की शीख ।
अय वीर क्षत्रिय वंशीय, करम करो यव् से शीख ॥

समय बद्‌ध संयमित जीवन, यव् से सफलता सूत्र ।
स्वस्थ जीवनमा स्वस्थ मन, या से येको मंत्रसूत्र ॥

उठो करम करन लाई, तुम्ही आपरी जप ला तोड़ो ।
सफलता लेवनो से, मेहनत को संग नाता जोड़ो ॥

****

ऋषि बिसेन

१०६. नवी दुनिया नवो रंग

जमाना तेजी लक् बदल रही से ।
समाज की सोच भी बदल रही से ॥
रहन सहन खान पान बदल रही से ।
धीरु धीरु सबऊजा बदल रही से ॥१॥

नवो रंग मा आय गयो यव् जमाना ।
संस्कृति ला भूल रही से नव् जमाना ॥
संस्कार बिसर रहवयो सेती आता ।
भुलाय रही सेत पुरानो दस्तूर आता ॥२॥

काजक आय अच्छा काजक आय बुरा ।
फरक करनो भयो आता मुश्किल ॥
नवी पीढ़ी अन् जूनी पीढ़ी की से दुरी ।
सामंजस्य होय रही से आता मुश्किल ॥३॥

बदलाव से प्रकृति को शास्वत नियम ।
अच्छो अन् बुरो मा फरक शीखनो पढ़े ॥
जूनी पीढ़ी ला यव् फरक ढूंढनो पढ़े ।
नवी पीढ़ीला बुरो बदलाव छोड़नो पढ़ें ॥४॥

नवी दुनिया को नवो रंग सही त् से ।
पर पुरखा गिनको मान राखनो पड़े ॥
अतीत की शिक्षा सबला देवनो पड़े ।
नवो रंग को भी सुवागत करनो पड़े ॥५॥

****

ऋषि बिसेन

१०७. घर् मा मोरो आवजोस

हे कुल देव मोरो प्रभु !
बिनती सुन मोरी प्रभु !!
आवजोस तू आवजोस!
घर् मा मोरो आवजोस !!

बाट देखु दिवस भर तोरी !
सुन ले प्रभु विनती मोरी !!
आवजोस तू आवजोस !
घर् मा मोरो आवजोस !!

नहानसो घर् आय मोरो !
हिरदय से मोठो मोरो. !!
आवजोस तू आवजोस !
घर् मा मोरो आवजोस !!

सब दून अर्पण से तोला !
देय दया को दान मोला !!
आवजोस तू आवजोस !
घर् मा मोरो आवजोस !!

पूजा की तयारी से मोरी !
राख ले आता आश मोरी !!
आवजोस तू आवजोस !
घर् मा मोरो आवजोस !!

अर्पण तयार से मोरो !
ग्रहण कर भोग मोरो !!
आवजोस तू आवजोस !
घर् मा मोरो आवजोस !!

****

ऋषि बिसेन

१०८. हर हर महादेव.........

हमरो कुलदेव से महादेव,
जपसेजन रोज हर हर महादेव,
हर हर महादेव ....

उज्जैन को राजा महाकाल,
जय शिवशंकर भोलेनाथ महादेव,
हर हर महादेव ....

श्रीराम प्रभु को आराध्य,
विक्रमादित्य अन् भोज को आदर्श,
हर हर महादेव ....

प्रकृति को देव महादेव,
आती वय शृष्टि का तारणहार,
हर हर महादेव ....

महाशिवरात्रि से कालरात्रि,
अंधारो ला उजारो कर देसे,
हर हर महादेव ....

दुःखहन्ता सेव कैलाशपति,
सबला देव तुम्ही सुख अना समृद्धि,
हर हर महादेव ....
****

ऋषि बिसेन

मोरो परिचय

नाम : ऋषि कुमार बिसेन
माता : श्रीमती कृष्णा बिसेन, पिता : श्री फागुलाल बिसेन
जन्म : २४/०६/१९८०, जन्मस्थान : खोलवा (बैहर)
मूलनिवास :ग्राम खामघाट (लालबर्रा),जि.बालाघाट
शिक्षण : B.E.(Metallurgical Engineering), GEC/NIT, Raypur
Master in Taxation and Business Laws,NALSAR.
University of Law, Hyderabad.
वर्तमान कार्य : शासकीय सेवा (केंद्र सरकार)
(भारतीय राजस्व सेवा, आयकर विभाग, २०१० बैच)
संयुक्त निदेशक एवं पाठ्यक्रम निदेशक, ७४ वाँ बैच,
भारतीय राजस्व सेवा,राष्ट्रीय प्रत्यक्ष कर अकादमी,नागपुर.
कार्य अनुभव : १. वाणिज्य कर निरीक्षक, वाणिज्य कर विभाग,
मध्यप्रदेश शासन. २. उप पुलिस अधीक्षक, गृह विभाग, मध्यप्रदेश शासन.
३.आयकर विभाग कार्य अनुभव: कर निर्धारण,अन्वेशन, मुख्यालय, प्रशासन.
४.सह पाठ्यक्रम निदेशक, ७० वाँ बैच, भारतीय राजस्व सेवा.
विशिष्ठ उपलब्धियाँ : १. सांस्कृतिक कार्यक्रम हेतु शाला स्तर पर पुरस्कार, निबंध लेखन में प्रतियोगिता में जिला स्तर पर दूसरा स्थान हेतु सम्मान.२. कक्षा दसवीं में बैहर तहसील में प्रथम और बालाघाट जिले में प्रथम दस में आने के लिए कन्हैया लाल पटेल पुरस्कार. ३. कक्षा बारहवीं में शाला में प्रथम स्थान हेतु, प.सुंदर लाल शर्मा, शैक्षणिक संस्था, रायपुर के द्वारा सम्मान.
संपादकीय कार्य : सामाजिक पत्रिकाए, शैक्षणिक पत्रिकाए.
लेखन कार्य : हिंदी और पोवारी भाषा में अनेक सामाजिक पत्रिकाओं में लेख.
अभिरुची : लेखन, बागवानी, ग्राम भ्रमण, युवाओं का मार्गदर्शन, प्रेरक वक्ता.

हृदय प्रकाशन
9922314564
nikade64@gmail.com

पोवारी संस्कृति
ऋषि बिसेन
ribisen@gmail.com

मूल्य-नि:शुल्क